श्रीः ।

विदुरनीति ।

जिसको

श्रीमहर्षि वेदव्यासजीने सर्व पुराण बनाकर संतुष्ट न होके परमज्ञानरूप यह अमृत प्रसंग महाभारत पुराणमें कलिग्रसित पुरुषोंके उद्धारार्थ वर्णन किया ।

वही

पण्डित-श्रीधरके पुत्र कृष्णलालने सर्व सज्जनों के हितार्थ सरल भाषामें उल्था किया ।

जिसे

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९६१, शके १८२६,

सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्राध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है.

भूमिका ।

धन्यहै उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरको कि, जिसने एक बूँद पानीसे यह सुखदमयी सृष्टि अपरम्पार नानाप्रकारकी कल्पवल्ली; लघु, दीर्घ, चल, अचल, जीव, जंतु, जल, थल, प्राणियोंसे विभूषित किया और फिर उनके तरणके लिये इस असार संसारसागरमें नौकारूपी चारों वेद प्रकटकिये जिनके सहारे सुजन विज्ञ पुरुष जीवनका आनंद पाकर अन्तमें स्वर्गलोकको जातेहैं अतः वर्त्तमान समयमें विषमघोररूपी कलियुगका प्रचारहै जिससे दिन बदिन नियम, धर्म, पूजा, पाठ, सदाचरण, स्वधर्म, नीत्याध्ययन, वेदाध्ययन, क्रम क्रम लोप हुआजाताहै और प निंदक, वेदनिंदक, अधर्म्मी, कपटी, हिंसक, दुराचरणी, जुवारी, लम्पट, चोर, इत्यादि-कोंकी उन्नतिहै । इसलिये मेरे मनमें आया कि, कोई ऐसी पुस्तक उत्तमछापूं जो सर्वसाधारणको अत्यंत उपयोगीहो और मान्यहो, तथा यह "विदुरनीति" जिसको विदुरजीने ज्ञान, ध्यान, धर्म्म, नीति, वेदांतरूपी अ-

मृतमय वचन राजा धृतराष्ट्रप्रति कहाहै तिसीको, महर्षि वेदव्यासजीने देववाणीमें महाभारतमें गायाहै और परमपूज्य देवपूज्य श्रीशिवसुत गणेशजीने अपनी लेखनीसे उद्धृतकिया ऐसा जो सर्व्वोपरि सर्वमाननीय उत्तम ग्रंथ अलभ्य सो हमने सरलभाषामें कर आयु, आरोग्य, अर्थ, धर्म्म, काम, मोक्ष, यश प्रदाता वर्णन किया यह बालसे वृद्ध पर्य्यन्त तथा स्त्रियोंकोभी बहुत उपयोगीहै और प्रथम बाल तथा लडकियोंको पढानेसे उनकी बुद्धि निर्म्मल तथा स्वधर्ममें प्रवृत्त होतीहै, यही पुस्तक मरहठी तथा गुजराती भाषामें लक्षप्रति बिकतीहैं और वे इसका अलभ्य गुण उठाकर तनमनसे अनुकरण करतेहैं । पश्चात्तापकी बातहै कि, अभी बहुतसे हमारे मध्यस्थवासी हिन्दीरसिक इससे परिचय नहोकर महामोहरूपी रात्रि ख्याल तमासोंकी पुस्तकोंमें सोतेहैं हे भाइयो ! हे विद्वज्जन मित्रवर्यो ! ! उठो २ यह समय बडा कीमतीहै ऐसा कर्म करो जिससे लौकिकमें प्रशंसाहोकर अन्तमें सुरपुरको जावो. इति ।

श्रीगणेशाय नमः

अथ

विदुरनीतिप्रारंभः।

प्रथमोऽध्यायः १.

एक समय संजय, राजा धृतराष्ट्रके पास आया और कौरवोंकी निंदाकर कहने लगा कि, कल हम राजसभामें आके भीष्म द्रोणादिक जहां बैठे होंगे वहां सबके सामने पांडवोंका संदेशा कहेंगे, फिर जो कुछ होना-होगा सो होगा. ऐसे कहके संजय तो घरको गया, और राजा धृतराष्ट्र अपने चित्तमें चिंता करके परम ज्ञानवान् बुद्धिमंत निस्पृही, जिनके कहनेसे सुननेवालेको समाधानही होवे, ऐसा जो विदुर उसको बुलाके सब वृत्तांत कहा और बोला कि, हे विदुर ! संजय कल सभामें पांडवोंका संदेशा कहैगा, सो अवश्य हमारी

निंदाही करेगा यह निश्चयहै और उनके कहनेसे क्या अनर्थ होगा सो कुछ समझ नहीं पडता. जबसे वह कहगया है तबसे मैं बडा चिंतातुर हूँ, निद्रा आती नहीं, शरीर मेरा विकल हो रहा है इसवास्ते तू मुझको ऐसा उपदेश कर कि, जिससे मेरा संताप मिटै. जो तुमको अच्छा दीखै सो कह. हमारे वंशमें तेरे जैसा ज्ञानी सुज्ञ पुरुष दूसरा नहीं है.

ऐसे वचन सुनके विदुर बोला कि, संजय तो परमधार्मिक, विवेकमान् और महात्मा है इसवास्ते अन्यथा बोलनेका नहीं, परंतु सच कहो तुमसे तो कुछ अपराध नहीं हुआ ? क्योंकि तू बोलताहै निद्रा आती नहीं, सो निद्रा चार जनोंको नहीं आती.

जिसको बल, और सहायक न होवे और बलवानुके संग वैर करे उसको १ जिसका द्रव्य चला जाता है २ कामके वशीभूतको ३ और चोरको ४ इन चारोंमें से कुछ तुझसे तो नहींबना है ? जो पुरुष ज्ञानवान् है

उससे यह काम नहीं हो सकते सो ज्ञानवान् कौन और मूर्ख कौन उनके लक्षण कहताहूँ—

अच्छे कर्म करै; बुरोंको छोडै; नास्तिकपना रक्खै नहीं; वेद और शास्त्रपै विश्वास रक्खै. क्रोध, हर्ष, गर्व, निर्लज्जता और अभिमान ये जिसमें न होवे; और जिसकी गुप्तबात दूसरा नहीं जानै, जो काम करना होवें उस कार्यकी सिद्धिहुए पीछे लोगोंको मालूम पडे. शीत, उष्ण, भय, प्रीति, मातबरी, गरीबी, इनसे अपने कार्यमें विघ्न करै नहीं; जो उचित कार्य करके धीरे धीरे संसारके विषय भोग छोडके अपना चित्त मोक्षमार्गमें लगावे, अपनी योग्यता देखके मन चलावै; अपनी शक्ति अनुसार काम पसारे; किसीका अपमान नहीं करै; किसीकी कही बात जल्दीसे समझे; जहां शंका होवे वहां समझकर निश्चय करनेमें घबरावे नहीं; सार वस्तुकी इच्छा करै; आग्रह किये सिवाय दूसरेकी बातमें ध्यान न लगावे; अपनेको न मिलनेवाली वस्तुकी इच्छा नहीं करै, गई

वस्तुका सोच न करै, कैसाही भारी संकट आया तोभी बुद्धि स्थिर रक्खै, जिस कामको शुरूअ किया उसको पार करै; हरकामोंमें विचार करके हाथ डालै, वृथा काल न खोवै; अपना मन स्वाधीन रक्खै, बड़ों के कर्म देखकर संतोष करै, कहा हुआ हितवचन सुनै, अपनी स्तुति सुनके आनंद न मानै, अपमानसे दुःख न मानै, समुद्र समान चित्त स्थिर रक्खै, सर्व वस्तु नाशवंत समझै; सर्व कार्यौकी योजना जानै और प्रयत्नभी करना जानै, सभामें विचारकर वचन बोलै; रसयुक्त तर्क करनाजानै; समयको समझके बोलै, बोलते समय संशय युक्त होके बोलनेमें गडबडावे नहीं, बातका सारांश जल्दी बोलना जानै; यथार्थबोलै, बडोंकी मर्यादा नहीं तोडै, बहुत द्रव्यवान् है, विद्यावान्है, ऐश्वर्यवान् है तोभी अभिमान न करै इतने लक्षण ज्ञानीके हैं, अब मूर्खके लक्षण कहता हूँः—

विद्या न पढाहो और अभिमान करै, दरिद्री होकर

कुकर्मसे द्रव्यकी इच्छा करै, उसे मूर्ख जानना और अपना द्रव्य खर्च डाले, दूसरेका लेनेकी इच्छा-करै, अपने सज्जन मित्रके संग कपट करै, जिसकी इच्छा नहीं करना सो करै, इच्छा करनेकी होवे सो करै नहीं, जिसकी संगति नहीं करना चाहिये उसकी करै, मित्रका स्नेह तोडै, अपनी कीर्त्ति जिस तिससे कहता फिरै, दूसरेकी यथार्थ बात भी अन्यथा समझै, जो जल्दी होनेका कार्य उसको देर लगावै, पितरोंका श्राद्ध तर्पण देवपूजा वगैरह न करै, अपने दिल जैसा मित्र, मित्रता करनेके योग्य कोई भी दृष्टि नहीं आवे उसको निश्चय मूर्ख समझना, और बिना बुलायेजावे, बिना बुलाये बोलै, विश्वास न रखनेकी जगह विश्वास रक्खै, चित्त स्थिर नहीं रक्खै, दूसरेको दोषदेवै वही काम आप करै, बिना कारण क्रोध करै, अपने बलको आप नहीं समझै, स्वधर्म और स्वार्थ न जानै, जो वस्तु नहीं मिलनेकीहै उसको लेनेकी इच्छा करै, जिस जगह

लाभ नहीं उस स्थानसे लाभकी इच्छा करै, कृपणका आश्रय करै, ये लक्षण मूर्खके हैं फिर अपनी संपदा, वस्त्र, आभूषण, आपही अकेला भोगै, अपने आश्रितोंके विषयमें बहुत कृपणता करै, और अनर्थ करके द्रव्य संचय अपना करै, उसका भोग दूसरा भोगै और आप केवल पापोंका मात्र अधिकारी होवे ये निश्चय मूर्ख के लक्षण हैं.

एकाग्र चित्त करके विचारना कि यह काम करना या नहीं करना-सलाह १ रिस्पत २ फितूर ३ युद्ध ४ इन चार युक्तियों करके शत्रु १ मित्र २ उदासीन ३ इन तीनोंको अपना कर लेना.

शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ ये पंच विषय लेनेवाली पांचों इंद्रियोंको जीतना चाहिये.

काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ मद ५ मत्सर ६ इन छहोंको शत्रु समान समझना चाहिये.

स्त्री १ द्यूत २ जीवहिंसा ३ मदिरापान ४ कटुक

वचन ५ थोडे अपराधपर मोटी शिक्षा ६ दूसरेकी बातमें दूषण ७ यह सात अवगुण छोडकर सुखी होना चाहिये.

विष एकको मारता है, शस्त्र एकको काटता है, परंतु राज्यकी गुप्त वार्त्ता फूटी हुई राजा सहित प्रजा का नाश करती है; इसवास्ते राज्यकी गुप्त बात नहीं बोलना चाहिये; अकला छिपाछिपकर मिष्टान्न खाना न चाहिये, अकेलाही सर्व द्रव्य लेनेकी इच्छा नहीं करना चाहिये, अकेले दूर चलना नहीं चाहिये, बहुत आदमी सोते हों वहां अकेला जागते बैठना नहीं चाहिये, जिसकी दूसरी उपमा नहीं; उसकी महिमा बडी अगाध है; जो स्वर्गके रस्तेको पैडी, जो समुद्र तिरनेको नौका, ऐसा जो सत्य उसको हर्गिज नहीं छोडना चाहिये.

क्षमावंत पुरुष दया के सिवाय किसीका अनभल नहीं करते, इसवास्ते लोग उनको निर्बल कहते हैं

परंतु उनमें यह दोष लगाना नहीं चाहिये, क्योंकि क्षमाके तुल्य दूसरा बल नहीं है, अशक्तको क्षमा बड़ा गुण है, समर्थको क्षमा भूषण है; क्षमासे सर्व वशीभूत होते हैं, क्षमासेही सब कुछ मिलता है, क्षमारूपी तलवार जिसके हाथमें आई तो फिर उसका शत्रु क्या करसक्ताहै; जिस पुरुषको क्षमा नहीं; सो महाक्रूर कर्म करके पापोंका अधिकारी होता है धर्म सिवाय दूसरा पुण्य नहीं. क्षमा सिवाय दूसरा साधन नहीं, विद्या समान दूसरी तृप्ति नहीं; किसीका घात नहीं करना, इस समान दूसरा सुख नहीं.

दो पुरुष इस लोकमें शोभते हैं अमृत समान वचन बोले सो १ साधुकी पूजा करे सो २.

यह दोनों दूसरेको विश्वास उत्पन्न करते हैं, एक स्त्रीने जो वस्तु संग्रह किया वो देखके दूसरी भी इच्छा करती है १ एक एकका पूजन करता है सो देखके दूसराभी उसीको पूजने लगता है २.

यह दोनों अपने शरीरको आपही शोषण करते हैं थोड़ाभी मिलै नहीं और बहुतकी इच्छा करै सो १ द्रव्य मिलानेकी सामर्थ्य नहीं और न मिलनेसे क्रोध करता है सो २.

ऐसे करनेसे यह शोभा पाते नहीं, गृहस्थ होके संसारके उद्योगों को छोडे सो १ संन्यस्त होके संसारीके समान कर्म करै सो २.

ये दो स्वर्गवास करते हैं-दरिद्री होके दाता १ राजा होके कृपालु २.

सत्कर्मसे मिलाये द्रव्यकी दो अमर्यादा होती हैं; कुपात्रको दान देना सो १ सुपात्रको नहीं देना सो २.

ऐसे दोनोंके गलेमें पत्थर बांधके पानीमें डुबा देना चाहिये, द्रव्यवान् होके धर्म नहीं कर्ता १ दरिद्री होके ईश्वरमें चित्त नहीं रखता २.

इस लोकमें मनुष्योंको तीन उपाय हैं-युद्ध करना सो कनिष्ठ १ ढोंग फितूर करना सो मध्यम २ सात्विकीसे चलना सो उत्तम ३.

ये तीन कर्म वाले मनुष्य तीन प्रकारसे गिने जाते हैं-उत्तम पुरुष उत्तम कामोंसे १ सामान्य पुरुष सामान्य कामोंसे २ नीचपुरुष नीच कामोंसे ३.

स्त्री १ पुत्र २ गुलाम ३ इन तीनोंको निर्द्धन कहना चाहिये, क्योंकि यह जिसके होते हैं वो इनके संचय किये द्रव्यके मालिक होते हैं, इस वास्ते.

दूसरेका द्रव्य हरलेना १ दूसरेकी स्त्रीको स्पर्श करना २ इष्टमित्रको छोडदेना ३ यह तीनों अपराध अपनेही नाश करनेवाले हैं.

काम १ क्रोध २ लोभ ३ ये तीनों अनर्थमें डालने वाले हैं इसवास्ते इन तीनोंको छोड देना चाहिये.

देवतासे वरदान मिला सो लाभ १ राज्यलाभ २ पुत्रलाभ ३ परंतु शत्रुको संकटमेंसे छुटाना यह लाभ तीनोंसे अधिकहै.

इन तीनका त्याग कदाचित्‌भी नहीं करना-जिस

को अपना कह चुके सो १ अपनी सेवा कर्ता है सो २ अपने शरण आया सो ३.

इस चारके संग राजाको सलाह करना नहीं चाहिये-मूर्ख १ चुगुल २ आलसी ३ खुशामदिया ४.

ये चार अपने घरमें रखने लायक हैं- अपनी स्वजातिका बूढा १ कुलवान २ गरीबमित्र ३ जिसके संतान नहीं सो बहिन ४.

ये चार तुर्तही फलदेनेवाली हैं; ईश्वरकी विचारी हुईबात १ तपस्वीका वचन २ विद्यावान होके नम्रता ३ और पापके कर्म ४.

ये पांच अग्नि तुल्य समझके भजना-पिता १ माता २ विवाहमें होम करै सो अग्नि ३ देव ४ गुरु ५.

देवता १ पितृ २ मनुष्य ३ संन्यासी ४ अभ्यागत ५ इन पांचोंकी पूजा करनेसे यश मिलता है.

मित्र १ शत्रु २ मध्यस्थ ३ बडेरा ४ आश्रित ५ ये पांचौ जहां राजा तहां तहां पीछेसे जाते हैं.

श्रोत्र १ त्वचा २ चक्षु ३ जिह्वा ४ घ्राण ५ इन पांचों इंद्रियनमेंसे एक दोभी नाश हुये पीछे बुद्धिका धीरे धीरे नाश होताहै (दृष्टांत) जैसे पानीकी पखालमें छिद्र होजाताहै और उसमेंसे पानी धीरे धीरे सब निकल जाता है इसवास्ते, इंद्रियोंका पालन करना चाहिये.

सम्पत्ति मिलाने वालेको यह ६ छोडदेना चाहिये; निद्रा १ निद्रा संबंधी आलस्य २ भय ३ द्वेष ४ सर्वदा आलस्य ५ अधैर्य ६.

अच्छा बोलना नहीं जानता ऐसा पुरोहित १ विद्या पढा नहीं ऐसा गुरु २ प्रजाका रक्षण करै नहीं ऐसा राजा ३ मधुर बोलना नहींजानती ऐसी भार्या ४ ग्राम में रहनेवाला ग्वाल ५ जंगलमें रहनेवाला नाई ६ इन्होंको टूटी नौका समान छोड देना चाहिये.

सत्य १ धर्म करना २ आलस्य न करना ३ दूसरेके गुणको दोष नहीं लगाना ४ क्षमा ५ धैर्य ६

ये छः गुण पुरुषको कभी नहीं छोडना चाहिये.

द्रव्य १ निरोगपना २ पराक्रम ३ हितकर्ता स्त्री ४ अनुकूल पुत्र ५ द्रव्य संचय करै ऐसी विद्या ६ ये बड़े सुखके देने वाले हैं.

काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ मद ५ मत्सर ६ इन छहोंको जीतैगा उसको पाप अथवा अनर्थ कुछभी नहीं बँधैगा—

ये छः प्रकारके पुरुष छः जनोंसे सुखी होते हैं- असावधान से चोर १ रोगीसे वैद्य २ विषयी पुरुषसे व्यभिचारिणी स्त्री ३ यजमानसे याचक ४ शत्रुसे जीतके राजा ५ राजाके संयोगसे पंडित ६.

गाय १ चाकरी २ खेती करनेवाला ३ स्त्री ४ विद्या५ मूर्खका संग ६ यह छः एक घडीभी भूलनेसे बिगडते हैं.

यह छः अपना कार्य होजानेपर उपकार करनेवालेको भूल जाते हैं, सीखा हुवा शिष्य गुरुको १ स्त्री मिले पीछे पुत्र माताको २ संभोग हुये पीछे भर्तार स्त्री को ३

जिसका काम होगयाहो सो काम करनेवालेको ४ नदी उतर गये पीछे नाववालेको ५ रोगी अच्छा होगये पीछे वैद्यको ६.

निरोगी शरीर १ कर्जा नहीं होना २ परदेशमें नहीं रहना ३ साधुकी संगत ४ अन्न वस्त्र पुष्कल होना ५ निर्भय स्थानका वास ६ यह छः मृत्युलोककेसुख हैं.

सहन कर्ता नहीं सो १ दयावान नहीं सो २ असंतोषी ३ क्रोधी ४ नित्य चिंताकी शंका जिसके मनमें सो ५ दूसरेके भाग्य पर पेट भरै सो ६ ये छः पुरुष दुःखी समझना.

स्त्रीका छंद १ जूवा २ शिकार ३ मद्यपान ४ कठोरवचन ५ थोड़े अन्याय पर मोटी शिक्षा ६ अन्यायसे मिलाया द्रव्य ७ ये सात अवगुण राजाको छोड़ना चाहिये.

ये आठ बहुत सुख शोभाके देनेवाले हैं- मित्रकी संगत १ पुष्कल द्रव्यप्राप्ति २ पेटमें सुपुत्र ३

चाहिये जैसी स्त्री ४ प्रसंगपर बात उपजना ५ अपने कुलमें कुलका दीपक होना ६ इच्छा करी हुई वस्तु प्राप्ति होना ७ सभामें सन्मान ८.

ये आठ गुण पुरुषको शोभा देते हैं-सुबुद्धि १ अच्छे कुलमें जन्म २ मन स्वाधीन ३ शास्त्राध्ययन ४ पराक्रम ५ वाचालपना ६ अपनी शक्ति अनुसार दान करना ७ दूसरेका किया उपकार याद रखना ८.

शरीर है सो एक घर समझना जिसके नेत्रोंके छिद्र २ नाकके छिद्र २ कर्णके छिद्र २ मुखका छिद्र १ मलमूत्रके छिद्र २ ये नव द्वारे हैं. सत्व १ राजस २ तामस ३ ये तीन खंभे हैं, पृथ्वी १ जल २ वायु ३ तेज ४ आकाश ५ ये पांच इसके साक्षी हैं, ऐसा जो घर तिसमें रहनेवाला धनी सो जीवात्मा है, जिसको कोई पहिंचानता है उसीको बुद्धिवान् समझना चाहिये.

ये दश जने अपना बुरा या भला समझते नहीं मद्य पीनेवाला १ विषयासक्त २ उन्मत्त ३ थका हुवा ४

कोपिष्ठ ५ भूखा ६ उतावला ७ लोभी ८ डरनेवाला ९ और कामातुर १०.

जो काम क्रोध छोडता है; सत्पात्र समझके जो कुछ देना होवे सो देता है; उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ, यह कैसाभी तारतम्य जानता है, शास्त्र जानता है, युक्तिसे जल्दी कार्य करना जानता है; ऐसे पुरुषको सर्व लोग नमन करते हैं.

लोगोंको ऐसे आचरण वाले पुरुषका विश्वास रखना चाहिये जो निश्चय अपराधी हुये विना दंड करता नहीं, करै सो अपराध बमूजिब करै, क्षमा योग्य है उस अपराधीकी क्षमा करै.

ऐसे पुरुषको लक्ष्मी आप प्राप्त होती है, दुर्बलकी अवज्ञा अपुन करता नहीं, सामग्री सिद्ध करके शत्रुपै जाताहै, बलवानके संग वैर करै नहीं, अपना चढ़ता दिन देखके युद्धको खड़ा होता है.

उसको धैर्यवान् कहते हैं जो विपत्ति कालमेंभी स्थिर

रहके उद्योग करता है, समयमें दुःखभी सहन करता है ऐसेको शत्रु जीत लिया ऐसा कहना.

इसलोकमें ये सुखी हैं, जो व्यर्थ परदेशमें नहीं रहता, पापीका संग नहीं करता, परस्त्रीका स्पर्श नहीं करता; थोडे वास्ते वाद नहीं करता, दूसरेने अपना सत्कार नहीं किया तौभी क्रोधमें नहीं आता, अपनेको करना योग्य सो खीझके करै नहीं, अपनेको पूँछनेसे यथार्थही बोले, ढोंग, चोरी, चुगली, मद्यपान, यह करै नहीं, ऐसे पुरुषको सत्यवादी और सुखी समझना चाहिये.

जो पुरुष दूसरेकी ईर्शा नहीं करता, जिसके हृदयमें सबकी दया, अपन दुर्बल होके समर्थकी बराबरी करता नहीं, अपनेको कोई कठोर वचन बोला तोभी सहन करता है, ऐसा पुरुष शोभाके लायक होता है.

जो मूर्खपना करै नहीं, अपना बड़ापन समझके किसीका तिरस्कार करै नहीं, किसीको कठोर वचन

बोलता नहीं, ऐसे पुरुषसे सर्व लोक हित करते हैं.

जो पीछे पडा हुवा (जूना) वैर फिरसे उत्पन्न करता नहीं, गर्वके वश होता नहीं, प्रबल है परन्तु कुकर्म करता नहीं; ऐसे पुरुषको सब सृष्टि मान देती है.

अपनेको सुख हुवा जिसका हर्ष मानै नहीं, दूसरेका दुःख देखके अपने दिलमें दुःख मानै, दूसरेकी वस्तु देके पछतावा करे नहीं ऐसेको सत्पुरुष कहना.

जो देशाचार, देशभाषा, जातिधर्म, जाननेकी इच्छा करै. कि उत्तम कौन और मध्यम कौन इसका विचार रक्खे, वह जहां जहां जायगा तहां २ सबका मालिक होता है.

दंभ १ मोह २ मत्सर ३ पापकर्म ४ राजद्वेष ५ चुगली ६ बहुतके संग वैर ७ मद्यपान ८ उन्मत्त तथा दुर्जनके संग विवाद ९ जो यह छोड़ता है, सो प्रधानकी पदवीके योग्य होता है.

दान १ होम २ कुलदेवताका पूजन ३ शुभकर्म

अध्याय १.

प्रायश्चित्त इत्यादिक नित्य कर्म ये ४ जो करता है उसको देवताभी मान देते हैं.

समानसे वाद करता है नीचसे करतानहीं, गुणवान् पुरुषका बहुत मान करता है ऐसेको बड़ेभी मान देते हैं.

अपने आश्रितकी खबर पूँछता है, थोडा आहार करता है, बहुत काम करता है, शत्रुनेभी आके याचना किया तो उसको भी देता है, ऐसे पुरुषको अनर्थ कभी प्राप्त नहीं होता.

जिसके दिलकी बात अच्छी या बुरी दूसरे लोग जानते नहीं, अपना विचार बहुत गूढ रखता है उसका कार्य कदापि बिगड़ने का नहीं.

जो सर्वप्राणीका कल्याण करनेका उद्योग करता है, सत्य और मृदु भाषण करता है, दूसरेका मान रखता है, जिसका मन शुद्ध है वो जातिमें बहुत शोभा पाता है, जैसे उत्तम खानका हीरा.

अपने हाथसे कोई एकाध काम बिगडगया और

दूसरेको मालूमभी नहीं पड़ा तौभी वो अपने दिलमें शर्माता लज्जित होता है, वो सर्व लोगोंमें श्रेष्ठहै, कारण ऐसे मनुष्यसे खराब काम फिर कभी नहीं बनैगा.

जो पुरुष प्रतापी होके समाधान वृत्ति और निर्मल चित्त रखता है; सो सूर्य समान शोभितहोता है, यह सयानेके लक्षण गुण धर्म हैं इसवास्ते शापदग्ध जो पांडुराजा उसके पुत्र पांच सो पांचोंही इंद्रसमान पराक्रमी और बालकपनेसे बढाये हुये, तथा शिखाये हुये सो तुम्हारी आज्ञा मानते हैं, परंतु उन्होंका राज्यभाग उन्होंको दो और पुत्रों सहित सुखी रहो, इससे देव तथा मनुष्य मेरेको क्या कहैंगे ऐसी शंका तेरेको नहीं रहैगी.

प्रथमाऽध्याय समाप्त १.

अध्याय दूसरा २.

अब धृतराष्ट्र कहते हैं कि, हे विदुर! मैं आदिसेही पांडवोंका अपराध करता आयाहूं, जिसका फल मेरेको

प्राप्त होवेगा यह तुमने जो नीति उपदेश किया, जिसपरसे मेरेको खुलासा निश्चय दीख गया इसवास्ते मैं बहुत भयभीत हूं. अब इस समय तू धर्मराजके मनका अभिप्राय लेके जिससे पांडवोंका और हमारा कल्याण होवे सो उपाय कर, ऐसे धृतराष्ट्र के वचन सुनके विदुर बोलता है.

यद्यपि अपने दिलमें आया है कि, एकाधका कल्याण होना, तथापि उनको पूँछे बगैर पाप अथवा पुण्य, हित अथवा अनहित, बोलना नहीं, अब तुमने मेरेको जो पूँछा तो मुझे अच्छा दीखता है सो कहता हूं श्रवण कर. जो जो कर्म खोटे उपायसे साध्य कियें जाते हैं उनका फल खोटाही होवेगा, ऐसा निश्चय मानके खोटे कर्मोंमें चित्त मत डाल, तू कहैगा कि, खोटा मार्ग छोडके सीधे मार्गसे जो काम अच्छा किया गया उसका फल अच्छाही मिलैगा. यह भी जो नेम कहा है. सो ठीक परंतु ऐसा उलट जहां होता है वहां सुज्ञ

पुरुष हैं सो ईश्वरी इच्छा है ऐसा समझके उसका खेद करते नहीं, जिस कामको जो सहायता चाहिये उसकी पहिलेही से योजना करना, जलदीसे हाथ डालना नहीं, जो काम करना उसमें सामग्री कितनी होना सो पहिलेहीसे देखना, आरंभ किया हुवा काम संपूर्ण होवेगा ऐसा अपना उद्योग है कि नहीं. यह सब विचारके पार पडनेका निश्चय होवे सोई करना.

जो राजा अपने किलेका बल जानता नहीं, वैसेही अपना काल अनुकूल है कि नहीं, द्रव्य भरपूर है कि नहीं, देश सुभिक्ष है कि नहीं, अपनी सैन्य बलवान् है कि नहीं, यह सब जानता नहीं सो राजा बहुत दिन राज्य करता नहीं, और जो राजा यह सब जानके उचित है सोई करै तो उसका राज्य बिगड़ता नहीं, राज्याधिकार होनेपर जो नम्रता रखता नहीं, उसके राज्यकी जल्दी ही सम्पत्ति नष्ट होती है, जैसे इन्द्रियों-को स्वाधीन नहीं रखनेसे जवानी शीघ्रही नष्ट होवे, जैसे

मछली बंसीमें लगा हुवा मांस देखके खानेंको जाती है परंतु उस बंसीमें लोहेका कांटा है सो अपने गलेको छेदके प्राण लेगा यह देखती नहीं, ऐसे विचारवान् पुरुषको करना योग्य नहीं, जो पदार्थ अपने खानेके योग्य है, और खाके हजम होनेकी शक्ति है, और हजम होके पराक्रम बढाने वाला है, ऐसा होवे तोही भक्षण करना; जो वृक्षका कच्चा फल तोडता है उस फलका मिठास उसको मिलता नहीं, उसका बीज भी उपयोगमें आता नहीं, जो पक्का फल तोडता है उसको फलका रसभी मिलता है, और उसमेंसे निकला हुवा बीजभी फिर दूसरे फलको पैदा करता है, जैसे भ्रमर फूलकी सुगंध मात्र लेके फूलको साबित रखता है, जैसे माली वृक्षसे फूल फल लेता है, मूलको कायम रखता है मूलको सताता नहीं वैसेही राजाको चाहिये कि, बगैर प्रजाको दुःख दिये उनके पाससे युक्तिसे थोडा थोडा द्रव्य लेते जाना, कितनेक कर्म ऐसे होते हैं कि, उद्योग

किये बिनाभी काल पायके आपसे आप साध्य होते हैं, कितनेक उद्योग करनेसेभी सिद्ध नहीं होते इसवास्ते विचार करके कर्तव्य होवे सो करना.

जो राजा प्रसन्न होके हित करता नहीं, और कोपायमान होके अहित करता नहीं, तो ऐसे राजाको प्रजा गिनती नहीं. जैसे नपुंसक पुरुषको स्त्री नहीं मानती है. कितनीक बातें ऐसी होती हैं कि, परिश्रम थोडा होके फल मोटा देती हैं; इसलिये ऐसी बातोंकी ओर बुद्धिमानोंको ध्यान रखना चाहिये.

जिस राजाकी प्रीतिपूर्वक सब प्रजापर दृष्टि होतीहै, उस राजाको प्रजाभी प्रीतिपूर्वक बहुत मान देती है.

जो शब्द करके दृष्टि करके सेवकोंपर प्रीति मात्र दिखाता है परंतु उसका हित करता नहीं सो १ जो प्रसन्न हुयेसे सेवकोंको द्रव्यादिक देते हैं परंतु उसकी मर्जी संपादन करनी बहुत कठिन सो २ भीतर तो निर्बल है परंतु बाहर औसान देखके बलवानपना दि-

खाता है सो ३ यह तीनोंसे तो जो मनसे दृष्टिसे शब्दसे उदारपनेसे सबको प्रसन्न रखता है, उसराजासे सर्व लोग अनुकूल होते हैं जैसे हरिण पारधीसे त्रास पाता है तैसे सर्व लोग जिस राजासे त्रास पाते हैं तो उस राजाको दैवयोग करिकै समुद्र पर्यंत सर्व पृथ्वीका राज्य मिलगया तोभी भ्रष्ट होता है ॥

अनीतिसे जो राजा चलता है, उसका राज्य जो बडोंका उपार्जन किया हुआ है वह भी जाता है, राजाके कर्ममुवाफिक जो राजा चलता है वह ऐश्वर्यवान् धन धान्य संयुक्त बहुत काल राज्य करता है जो अधर्म आचरण करताहै उस राजाको देखके पृथ्वी संकोचित होती है जैसे अग्निमें डाला हुआ चर्म सूखके संकोचन होता है दूसरेका राज्य लेनेका प्रयत्न करै वैसा अपना राज्य पालनेका उद्योग करना.

धर्म करके जिस राजाको राज्य प्राप्त होता है सो नीति करके पालन करै तो उससे लक्ष्मी प्राप्त होती है वो

लक्ष्मी उसको छोडती नहीं किन्तु धीरे धीरे बढती है.

कोई मस्ताना उन्मत्त बकरहा हो अथवा बालक बड बडाता हो तोभी उसमेंसे सारांशकी बात होवे सो लेलेना चाहिये, जैसे मिट्टीमेंसे मिलाहुआ सोना लेते हैं.

माता, पिता, गुरु, पंडित, इन्होंके भाषणमेंसे अच्छी अच्छी बातोंका संग्रह करते जाना, जैसे जौंहरी चुन चुनके अच्छे २ रत्न लेके संग्रह करता है.

पशुको सूँघनेसे मालूम होता है, ब्राह्मण को वेदद्वारासे दीखता है; राजाको सेवक समझावे वैसा दीखता है, दूसरे सर्व लोगोंको अपनी अपनी आँखोंसे दीखता है.

जो गाय सुखसे दूध नहीं देती सो बहुत कष्ट पाती है, और जिसके दुहनेमें प्रयत्न नहीं करना पडे तो वो गाय कष्ट पाती नहीं, जो वस्तु तपाये बिना ही चाहिये जैसी नमती है, तो फिर उस को कभी अग्निमें डालके तपाते नहीं, काष्ठ आपहीसे नमता है तो उसको तपाके लगाते नहीं, इसवास्ते तुमको

पांडवोंसे नम्र होना चाहिये क्योंकि वे बलवान् हैं.

पशुको पर्जन्यका बल, राजाको प्रधानका बल, स्त्री को पतिका बल, ब्राह्मणको वेदका बल.

सत्यसे धर्म रहता है, विद्या अभ्याससे रहती है, तैल मर्दन करनेसे रूप रहता है, धर्मका आचरण करनेसे कुलका रक्षण होता है, तौल तथा माप ध्यानमें रखनेसे अन्नका रक्षण होता है, फिरानेसे घोडेका रक्षण होता-है, चौकसाई रखनेसे गायका रक्षण होता है, जाडे वस्त्र पहिरानेसे स्त्री की मर्यादाका रक्षण होता है.

बड़े कुलमें जन्महै परंतु आचरणहीन है तो उसको बडा नहीं समझना, नीच कुलमें जन्म है और अच्छे आचरणमें चलता है तो उसको बडा समझना, दूसरेका द्रव्य रूप पराक्रम तथा बडा कुल देखके जिस-को अच्छा नहीं लगता उसको सुख सम्पत्ति नित्य रोग जैसे पीडा करती हैं.

नहीं करनेका कर्म करनेसे डरता है और करनेका

काम करनेसे भी डरता है; करी हुई मिसलत पार पडनेसे पहिले लोगोंको खबर पडनेसे डरता है, ऐसे पुरुषको जो करना होय सो सावधानीसे करना चाहिये.

विद्या १ धन २ सगेसोइयोंका साहित्य ३ ये तीन अभिमानी पुरुषको मिलनेसे बहुत चढ जाता है, परंतु येही सज्जन पुरुषको मिलैं तो अधिक नम्र होता है.

कोई कार्य वास्ते सज्जनने दुर्जनका बहुत मान किया तो इतनेहीमें वह हम सज्जनहैं ऐसा समझता है, परंतु दूसरे लोग उसको दुर्जनही समझते हैं, यह उसके ध्यानमें नहीं आता.

आत्मज्ञानीको साधु पुरुष बगैर गति नहीं, साधुको-भी साधु बगैर गति नहीं, असाधुकोभी साधुही गति देता है, परंतु साधुको असाधुकी जरूरत नहीं.

अच्छे वस्त्र शरीरपै पहिरनेवालेने सभा जीती; जिस-के घरमें गाय भैंस रहती हैं उसने स्वादिष्ट खानेकी तृष्णा जीती, वाहनपै बैठके चलनेवालेने मार्ग जीता,

जिसका स्वभाव अच्छा है उसने सर्वश जीता, इसवास्ते पुरुषको अच्छा स्वभाव रखना चाहिये. यह मुख्य है कि, जिस पुरुषका स्वभाव अच्छा नहीं; उसको धन होय, बंधु होय, आयुष्य होय तौभी क्या फल है सब व्यर्थ समझना चाहिये.

राजादिक बडे हैं उनके भोजनमें मांस मुख्य, मध्यम लोगोंके भोजनमें गोरस मुख्य, गरीबलोगोंके भोजनमें तेल मुख्य. कैसाभी अन्न हुवा तो गरीबको प्रिय लगता है, क्योंकि उनको क्षुधासे स्वाद उत्पन्न होता है, वो स्वाद दूसरेको नहीं परंतु बहुत करके श्रीमंतको भोजनशक्ति थोडी होती है, गरीबलोग लक्कड खायें तौभी पचता है.

मध्यमलोग मृत्यु आवेगी जिससे डरते हैं, उत्तम पुरुष अपमान होनेसे डरते हैं, नीच पुरुष पेट कैसा भरेगा जिससे डरते हैं.

विगर बाहरके शत्रुओंके जीतनेकी इच्छा करता है, उसका ये काम क्रोधादिक शत्रु अंदरसे उलटा डालते हैं, इंद्रियोंको जीते विगर जो राजा राज्य करताहै सो ऐश्वर्य मद करके राज्यसे भ्रष्ट होता है, रावणादिकोंने इंद्रियां जीती नहीं, सो विह्वल होके सीताहरण इत्यादिक काम करके ऐश्वर्य सहित प्राण गमाया.

पाप करनेवाले मनुष्योंका त्यागन नहीं करनेसे पुण्यवान् पुरुषोंकोभी पापियोंकी संगतिसे उनका आधा पातक लगता है, जैसे सूखे काष्ठके संग हराकाष्ठभी जलता है, इसवांस्ते पापी पुरुषोंका संग कदाचित्भी नहीं करना.

दुष्ट पुरुषके पास यह आठ गुण नहीं रहते दूसरेका अच्छा देखके संतोष करना १ सरलपना २ निर्मलता ३ संतोष ४ मधुर बोलना ५ इंद्रियोंका दमन ६ सत्यभाषण ७ शांति ८.

दुष्टमनुष्य कटुवचन और निंदा इन करिकै बडोंसे छल करते हैं, उनका पाप निंदा करनेवालेको लग-

ताहै, सहन करनेवालेको पुण्य होता है. दुष्टोंके पास दूसरा बल नहीं किसीका घात करना सोही उनका बल. दूसरेका पारिपत्य करना स्वाधीन है यह राजाका बल. अपने भर्तारकी सेवा करके उसकी मर्जी संपादन करना यह स्त्रीका बल. गुणवान् पुरुष दूसरोंका अपराध क्षमा करते हैं यह उनका बल.

गिनतीकेही शब्दों करके भाषण करना यह आना तो बहुत कठिन है, वैसेही बहुत बोलके बोलनेमें अर्थ चमत्कार नहीं छोडना. यहभी बहुत कठिन है, बहुत बोलनेमें सारांश अच्छा भाषण होता नहीं. बोलनेमें अच्छे शब्द आनेसे बडे हितकारक होते हैं और वेही खराब शब्दोंके आनेसे अनर्थका कारण होते हैं. बाणों करके छेदा हुवा अथवा कुल्हाडीसे काटाहुवा वन फिरभी पूर्ववत् हरा होताहै, परंतु वचनरूपी बाणोंका जो घाव लगता है सो फिर नहीं भरता प्रत्यक्ष बाण शरीरके बाहर लगा तो खैंचके निकाल सक्ते हैं; परंतु वचनका

बाण शरीरके अंदर घुसजाता है सो निकल सक्ता नहीं. वचनका बाण लगनेसे मनुष्यको रात दिन विश्राम आता नहीं, इसवास्ते बडे हैं सो वचनरूपी बाणसे दूसरेको दुखाते नहीं.

विदुर कहतेहैं कि, हे धृतराष्ट्र ! तुम्हारेसे पांडवोंका अपराध बहुत हुवा जिसका आजतक शुमारभी नहीं, तेरे पुत्रोंने द्रौपदीको सभामें लाके उनको वचनोंके बाण मारे और बाल केश पकडके खैंचा यह बडा अपराध किया, रावणने सीताको हरणमात्र किया जिसमें ही उसका प्राण गया, परंतु तुमने तो बहुतही अमर्यादा करी है, यह अपराध देखके तुमपर दैवभी खिज रहा है, अब तुम्हारा विनाशकाल नजदीक आया. जिसकी बुद्धि भ्रष्ट होती है तिनको बुरे काम अच्छे मालूम होते हैं, झूंठी बात सच्ची मालूम होती है, दूसरा कहै भी कि, यह बात खोटी है तौभी उनको खोटी लगती नहीं, पांडवोंके साथ विरोध करके तेरे पुत्रोंकी बुद्धिका

भ्रंश हुवा है, उन्होंपै तू परम स्नेह रखता है, इससे तेरी भी बुद्धिका विपर्यास हुवा है, यह तू क्यों नहीं समझता है ? कि, सकल राज्य लक्षणयुक्त, त्रिलोकीकाभी राज्य पालन करनेको समर्थ और तेरे पुत्रोंसेभी अधिक तेरी आज्ञा पालते हैं. ऐसाही राज्याभिषिक्त पांडुका बडा पुत्र, राज्यका अधिकारी,: ऐसा जो धर्मराज उसको राज्यसिंहासनपर स्थापन करनेकी तेरी बुद्धि होवो धर्मराजाके गुण कहांतक वर्णन करैं, जो अपना राज्य दुर्योधन करता है सो प्रत्यक्ष देखकेभी अभीतक क्षमाही करता है, क्योंकि युद्ध करनेको आरंभ किया तो प्राणीमात्रको उपद्रव होवेगा और तुम्हारा अपमान होवेगा इसवास्ते यह बुद्धि विचारके उन्होंने तेरे पुत्रोंके हाथसे बहुत अपमान तथा क्लेश आजतक सहन किया है. सो ऐसे पुरुषके साथ अंतमें तुम्हारा स्नेह होवे सो बडापन विचारके आगू होके करना ऐसा मेरेको दीखता है ॥ इति द्वितीयोऽध्यायः॥ २ ॥

अध्याय तीसरा ३.

धृतराष्ट्र कहता है कि, हे विदुर ! तू बहुत अच्छा भाषण करता है सो सुनके मेरी तृप्ति हुई नहीं इसवास्ते मेरेको फिरभी कह. ऐसा राजाका आग्रह देखिके विदुर बोलता है, हे राजा ! सर्व तीर्थोंमें स्नान और प्राणी-मात्रके संग प्रीति तथा दया यह दोनों पुण्य बडे हैं. जिसमें प्राणीमात्रके संग प्रीति रखना सो तो तीर्थ स्नान सेभी अधिक होता है. इसवास्ते तू पुत्रोंसहित कपटवृत्ति छोडके पांडवोंसे स्नेह करिके सुखी हो. जिससे इस-लोकमें कीर्ति होवेगी और शरीर छूटने पीछे स्वर्गमें जायगा. जहांतक इसलोकमें जिस पुरुषकी पुण्यकी कीर्ति लोगोंके मुखसे होती है; वहांतक वो पुरुष स्वर्ग-में वास करता है. इसवास्ते मैं तेरेको एक पुरातन कथा कहता हूं सो श्रवण कर.

आगे एक राजाकी कन्या केशिनी नाम रूपवान् बहुत सुंदरथी. कन्याके मनमें यहथा कि, मेरेको पति

उत्तम मिले ऐसी उसकी इच्छा समझके उसके पिताने स्वयंवर आरंभ किया. यह सुनके प्रह्लादका पुत्र विरोचन नाम दैत्य, यह स्त्री मेरेको प्राप्त होना ऐसी इच्छासे वहां आया. तहां इसकी परीक्षाके वास्ते केशिनीने इससे प्रश्न किया कि; हे विरोचन ! ब्राह्मण श्रेष्ठहै कि, दैत्य श्रेष्ठ सो कहो. देख ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं जभी तो सर्वको मान्य हैं परंतु राज्यासनपर तुम बैठते हो ब्राह्मण क्यों नहीं बैठते ? और जो दैत्य बडे हैं तो सर्व लोग ब्राह्मणोंकी पूजा क्यों करते हैं ? यह सुनके विरोचन उत्तर देता है कि, हम विश्वसृष्टिमें प्रजापतिसे उत्पन्न हुये इसवास्ते सर्वलोगमें हम श्रेष्ठ हैं, दूसरे लोग सब हमारेसे नीचे हैं, हमारे सामने देव तथा ब्राह्मण क्या पदार्थ हैं, यह सुनके केशिनी मनमें बोली कि, इसबातकी परीक्षा कल यहांहीं करलेतीहूं.

परंतु ऊपरसे विरोचनको बोली कि, अंगिराका पुत्र सुधन्वा कल प्रातःकाल आनेवाला है सो तुम-

भी आना. तब दूसरे दिन प्रातःकाल विरोचन और सुधन्वा केशिनीके पास आये, तब केशिनी सुधन्वाको देखतेही खड़ी हुई और दर्भासन बैठनेको दिया फिर पाद्य अर्घ्य आदि लेके पूजन किया. विरोचनको सुवर्णमय आसनपै बैठाया; उस अवसरमें विरोचन अपनी बड़ाई प्रसिद्ध करनेके हेतु सुधन्वासे कहा हे ब्राह्मण ! यह डाभका आसन छोडके सुवर्णमय आसनपै मेरे पास आकर बैठ, यह सुनके उसके मनका अभिप्राय समझके सुधन्वाने उत्तर दिया कि, हे विरोचन ! तेरे संग बैठना मेरेको उचित नहीं, यह सुन विरोचन क्रोध करके बोला अरे भट्ट ! तू बोलता है सो सच्च है, तेरी हमारी बराबरी नहीं तू लकडेके टुकडेपर तथा घासपर बैठनेवाला है, कदाचित् तू और हम एक जगह बैठें तो यह हमको योग्य नहीं, तब सुधन्वाने उत्तर दिया हे विरोचन ! तेरा बाप प्रह्लाद मेरेको सुवर्णके आसनपै बैठाके मेरे सामने खडा होके मेरी सेवा करता है यह तू देख-

ता नहीं, तब विरोचन कहता है कि, अपने घर चलके आया जिसको श्रेष्ठ समझके उसका सत्कार करना यह बडोंके लक्षण हैं, शास्त्रमें कहाहै इसवास्ते तेरेको ऊंचे आसनपै बैठाके मेरे पिता तेरे सामने खडा रहता है. इसमें बड़ापन किसका हुवा सो विचार कर.

इसरीतिसे दोनोंमें उत्तर प्रत्युत्तर हुये पीछे विरोचन बोला हे ब्राह्मण ! हम दैत्य सर्व प्रकारसे बडे हैं, यह बात निश्चयजानके अब अपनी जातके महत्त्वपनेका अभिमान छोड, यह नहीं करैगा तो अपन दोनों द्रव्यादिककी शरियत होड लगाके तीसरे तिहायतके पास चलो. फिर वो जो कहैगा सो अपन दोनोंजने मान्य करैंगे, यह सुनके सुधन्वा बोला कि, हमारे ब्राह्मणोंके पास द्रव्य (संपत्ति) नहीं सो तुम्हारी हमारी यही शरियत है कि, जो हारैगा सो अग्निकाष्ठका सेवन करैगा. और तीसरा किसको ढूँढेगे, तू कह तो तेरेही पिता प्रह्लादके पास चलैं, वो सत्यशील है सो तेरे वास्ते

कभी झूठ नहीं बोलेगा विरोचनने यह शरियत मान्य किया और दोनोंजने प्रह्लादके पास आये प्रह्लादने सुधन्वाका आदर सत्कार किया और आनेका कारण पूछा सुधन्वाने सब वृत्तांत कहा तब प्रह्लाद बोले कि, हे सुधन्वा ! विरोचन मेरा एकाकी एकही पुत्र है और तुम ब्राह्मण तपस्वी. इसवास्ते मेरेसे दोनों तर्फही नहीं बोला जाता. यह सुनके सुधन्वा बोला कि, तुम राजा न्यायकर्त्ता हो और हम दोनों वादी प्रतिवादी तुम्हारे पास आये हैं सो तुमको पुत्रका तथा ब्राह्मणका संबंध नहीं रखना चाहिये. सत्य होवे सो बोलना चाहिये. यहां किसीका पक्ष रक्खेगा तो अपराधी होगा, तू हमारा साक्षी है. पक्षपात छोडके सत्य होय सो न्यायकर तेरेको भय नहीं यह सुनके प्रह्लाद सुधन्वासे पूछता है जो सच झूठ जानता है और बोलता नहीं, अथवा खोटी साक्षी भरता है, खोटा न्याय करता है, तिसको क्या पाप लगता है और

उसपापसे इस लोक तथा परलोकमें क्या दुःख होता है. सो मेरेको कहो. तब सुन्धवा बोला कि हेराजा ! सुन

एक पुरुषके दो स्त्री जिसमेंसे एकहीके ऊपर प्रीति करता है, तिस करके दूसरीको जो दुःख होता है, अथवा जूवे खेलनेमें जो हारता है तिसको जो दुःख होता है, आज बहुत भार शिरपै रक्खा फिरभी इससेभी ज्यादा कल रक्खैगा सो दुःख जो सेवकको होता है. अथवा कोई पुरुष रस्ता भूलके अकेला फिरता है और क्षुधातुर हुवा है. इतनेमें उसको शत्रुने आके पकडा तो उस समयमें उसको जो दुःख होता है सोही दुःख झूठी साक्षी भरनेवालेको होता है, जो बकरी इत्यादिक छोटे पशुके हरने वास्ते झूठ बोलता है सो पांच पूर्वज सहित नरकमें जाता है, गायके हरण वास्ते जो झूठ बोलता है सो दशपूर्वज लेके नरकमें जाता है. घोडेके वास्ते जो झूठ बोलता है सो एकसौ पूर्वज लेके नरकमें जाता है. मनुष्यके वास्ते जो झूठ बोलता है सो एकहजार पूर्वज सहित

नरकमें जाताहै, द्रव्यके वास्ते जो झूठ बोलता है सो पहिले हुवे जो पुरुष और अब जो होवेंगे सो पुरुष उन्होंको नरकमें लेजाता है, भूमिके वास्ते जो झूठ बोलता है, तिसका सर्वस्व नाश होता है, ऐसे ही जो सच्ची या झूठी जानता है और साक्षी पूछनेसे साक्षी नहीं देता अथवा काम क्रोध लोभादिकमें आके सचेका झूठा बोलता है तथा वैसा न्याय करता है उसकोभी पातक लगके ऐसाही दुःख प्राप्त होता है, सो केशिनी उत्पत्ति करनेके वास्ते भूमि समान है इसवास्ते अन्यथा वचन तू हरगिज नहीं बोलना.

यह सुनके प्रह्लाद अपने पुत्रसे कहताहै, हे विरोचन ! मेरेसे सुधन्वाका पिता अंगिरा श्रेष्ठ है, तेरी माता से इसकी माता श्रेष्ठ है, तेरेसे सुधन्वा श्रेष्ठहै, सुधन्वा तेरेको जीत गया. अब तेरे प्राणका मालिक सुधन्वा है ऐसे वचन पिताके मुखके सुनके विरोचन बहुत खिन्न हुवा. सो यह देखके प्रह्लाद सुधन्वाकी प्रार्थना

करता है, कि हे ब्राह्मण! अब मेरा पुत्र मेरेको प्राण सहित कृपाकरके देना चाहिये, यह तेरेसे वर मांगताहूं. तब सुधन्वा प्रसन्न होके बोला हे प्रह्लाद ! तू पुत्रकी ममत्य नहीं रखके सत्यवचन बोला सो तू धन्य है, और तेरेको पुत्र प्राणसहित मैंने पीछादिया और केशिनी इसकी स्त्री होवो ऐसा आशीर्वाददेके सुधन्वा अपने आश्रमको गया. इस प्रकार प्रह्लाद पुत्रका पक्षपात नहीं करके पुत्रसहित सुखी हुवा, यह उसकी पुण्यकीर्त्ति उसदिनसे सब गातेहैं.

ऐसे कहकर विदुर बोला, हे राजा ! पुत्रको पृथ्वी चाहिये इसवास्ते पृथ्वी मिलनेके वास्ते असत्य बोलके पुत्र प्रधान सहित नाश मतकर, जैसे ग्वालिया हाथमें लकडी लेके गायोंकी रक्षा करताहै, तैसे दैव हाथमें लकडी लेके मनुष्योंकी रक्षा नहीं करते. परन्तु जिस मनुष्यकी दैवरक्षा कियाचाहताहै उसको बुद्धि उत्तम देताहै, जिसपरसे दैवकी कृपा जानना चाहिये. जो

वर्जनीयहैं, अब पांचवां शत्रुकी साक्षी नहीं करना, क्योंकि वो कदाचित् उलटी साक्षी देगा इससे ५ मित्रको भी साक्षी नहीं करना चाहिये. क्योंकि उनकी लोग शंका करके सची नहीं मानते हैं ६ भडुवा तथा छिनाल नशेवाज ७.

यह चार सत्कर्म करनेवाले हैं परंतु गैरविधिसे किया तो यही महा भयकारक होजाते हैं. लोग अपनेको बड़ा कहैंगे इसवास्ते अग्निहोत्र करना १ लोग अपनेको बडा कहैंगे इसवास्ते मौन धारण करना २ लोग विद्वान् कहैंगे इसवास्ते अध्ययन करना ३ प्रतिष्ठाके वास्ते यज्ञ करना ४.

यह अठारह जने ब्रह्महत्या करनेवालेके बराबर हैं दूसरेका घर जलाता है सो १ विष देता सो २ अपनी स्त्रीके जार कर्मसे पुत्र पैदा हुवा तिसका पैदा किया हुवा धन खाके पेट भरे सो ३ मद्य बेचनेवाला ४ बाणादिक शस्त्र बनाता है सो ५ दूसरेका अवगुण लो-

गोंको कहता है सो ६ मित्रोंसे द्रोह करता है सो ७ परस्त्रीके पास जाता है सो ८ औषधादिक देके गर्भ गिराता है सो ९ गुरुपत्नीसे संग करता है सो १० मद्यपीनेवाला ब्राह्मण ११ विश्वासघाती १२ दुःखीको दुःख देता है सो १३ परलोकको झूठा कहता है सो १४ वेदकी निंदा करता है सो १५ राज्यसत्ताके जोरसे लोहेकी शलाका मारके थैलीमेंसे अनाज निकालता है सो १६ स्वमार्ग छोडके कुमार्ग भटका फिरता है; सो १७ शरणागतको मारनेवाला १८.

अँधियारेमें दीपकसे देखा जाता है; सदाचरणसे धर्म देखा जाता है; आचरणसे साधु देखा जाता है; भयप्राप्तिके वक्तमें शूर समझा जाता है; दारिद्र्यमें धैर्य समझा जाता है; संकटमें मित्र तथा शत्रु समझा जाता है.

वृद्धापना रूप ले जाता है, आशा धैर्य ले जाती है, मृत्यु प्राण लेजाती है, द्वेष धर्म ले जाता है, क्रोध लक्ष्मीका नाश करता है, नीचसेवा उत्तम स्वभा-

वका नाश करती है, काम लज्जाका नाश करता है, अभिमान सर्वका नाश करता है.

लक्ष्मी सन्मार्गसे उत्पन्न होती है और सँभालके चलनेसे बढती है, इंद्रियोंका निग्रह करनेसे अक्षय होतीहै.

बुद्धिवानपना १ भलापन २ इंद्रियेंजीतना ३ शास्त्र का अभ्यास ४ पराक्रम ५ यथार्थ और सूक्ष्म बोलना ६ यथाशक्ति दान ७ परोपकार समझना ८ यह आठ गुण उत्तम हैं, जिस पुरुषका राजाने सत्कार किया उसमें बलात्कारसे यह गुण आतेहैं सो हे राजा ! यह गुण कर्णआदिकमें दीखते हैं सो स्वाभाविक नहीं हैं. किंतु तू उनका बहुत मान करता है इसवास्ते दीखते मात्र हैं.

यह आठ गुण स्वर्गप्राप्ति करनेवाले हैं, यज्ञ १ दान २ अध्ययन ३ तप ४ इंद्रियदमन ५ सत्य ६ धर्म ७ सरलपना ८ इसमेंके पहिलेके ४ तो सत्पुरुषके पास आके रहते हैं और पीछेके ४ साध्य होनेको सत्पुरुषकोभी प्रयत्न करना पडता है.

धर्मके मार्ग यह आठ प्रकारके जानना-यज्ञ १ दान २ अध्ययन ३ तप ४ सत्य ५ क्षमा ६ दया ७ निर्लोभ ८.

जिस सभामें वृद्ध नहीं सो सभा नहीं, जो धर्म नहीं जानता सो वृद्ध नहीं, जिसमें सत्यनहीं सो धर्म नहीं, कपट भाव जहां है सो सत्य नहीं.

यह दशगुणके समुदाय स्वर्ग प्राप्तिके कारण हैं-सत्य १ नम्रता २ शास्त्राभ्यास ३ उपासना ४ कुलीनता ५ सुंदर स्वभाव ६ बल ७ धन ८ शूरता ९ उचित बोलना १० पापकरके अधिकाधिक पापहीका संग्रह होता है. पुण्य करके अधिकाधिक पुण्यहीका संग्रह होता है, इसवास्ते पाप करना नहीं, पाप करनेसे बुद्धिका भ्रंश होता है, बुद्धिका भ्रंशहोनेसे पाप सिवाय और कुछभी नहीं दीखता. फिर फिर पुण्य करनेसे सुबुद्धि बढती है सुबुद्धि बढानेसे फिर फिर पुण्यही करता है और पुण्य के योग करके पुण्यके स्थानको जाता है; इसवास्ते समाधानवृत्तिसे पुण्यही करते रहना.

दोषदृष्टि, मर्मभेदक, कठोरवचन बोलनेवाला, वैर लगानेवाला, कपटी, ऐसे पुरुष पापों करके अंतको नरकमें जाते हैं.

जो निर्दोष दृष्टिहैं, ज्ञानी, सदा उत्तम कर्म करनेवालेहैं वे दुःख पाते नहीं; सर्वत्र सुखही पाते हैं ज्ञाता पुरुषकी संगति करके अपना जो ज्ञान बढता है वो उचित कर्म करके सुख बढाता है.

दिनको ऐसा काम करना कि, जिसके करनेसे रात्रिमें सुखसे निद्रा आवे, आठ महीने ऐसा करना जिसके करनेसे चौमासा सुखमें जावै, तरुण अवस्थामें ऐसा करना कि, जिसकरके वृद्धापन सुखसे जावै, जीवते ऐसा करना कि, जिसकरके मरे पीछे भी सुख होय.

पाचन भया हुवा अन्न, तारुण्य हुई स्त्री, युद्धमें पार पाया सो शूर, तत्त्व प्राप्त भया हुवा तपस्वी, इनकी प्रशंसा सर्वलोग करते हैं.

अधर्मसे पैदा किये हुवे द्रव्यसे मनुष्य अपना पाप

ढकनेकी इच्छा करता है परंतु वो पाप अधिक प्रसिद्ध होता है ढका जाता नहीं, गुरु शिष्यको शिक्षा करता है, राजा दुष्टको दंड देता है, यमराज गुप्तपाप करनेवाले को शासन करता है.

ऋषि और नदी इनका तो मूल और बड़ोंका माहात्म्य स्त्रियोंका दुराचरण इनका थाह लगता नहीं.

ब्राह्मणकी पूजा करनेवाला, दाता, जातिका संतोष करनेवाला, सदाचरण युक्त ऐसा जो क्षत्रिय सो बहुत-कालतक पृथ्वीका पालन करता है.

पृथ्वी सुवर्ण पुष्पमय है, उसके फूल तीन जने चुनते हैं; शूर १ विद्वान् २ सेवा करके स्वामीको प्रसन्न करना जानता है सो ३.

स्वबुद्धिसे विचारके किया सो काम श्रेष्ठ, अंगके बलमें किया सो मध्यम, और कपटसे किया सो नीच; दुर्योधन, शकुनी, दुःशासन, महामूर्ख हैं वैसाही कर्णहै इनपै राज्यका भार रखके तू ऐश्वर्यकी

इच्छा करता है सो कैसे प्राप्त होगी ? इस वास्ते अब सर्वगुणसंपन्न और तेरेको पिता जैसे मानते हैं ऐसे जो पांडव, तिन्होंपर तेरेको पुत्रोंकी मुवाफिक कृपा रखनी यह उत्तम है.

इति तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अध्याय चौथा ४.

विदुर कहता है हे धृतराष्ट्र ! तेरेसे मैं इस प्रसंगमें आत्रेयऋषि और साध्यदेवका संवाद कहता हूं. सो श्रवण कर; एक समय आत्रेयऋषिसे साध्यदेव पूछने लगे कि, हे ऋषि ! तुम बुद्धिमान् हो और शास्त्रका तत्त्व जानते हो, सो कृपाकरके मेरेको ज्ञानी पुरुषके लक्षण कहो; जिसकरके हम अपना हित समझके सुख पावें. यह प्रार्थना सुनके ऋषि बोले, हे देव ! जो सर्व इंद्रियें जीतै, योगमार्गके अभ्याससे जो समाधि सुख लेता है जिसने मनका मैल धोके अंतःकरण शुद्ध किया, जो

सुख दुःख समान गिनता है, तिनको ज्ञानी समझना दूसरेने क्रोध करके अपनेको बुरा कहा तौभी सहन करता है, सामने होके जवाब देता नहीं, जिस करके उस बोलनेवालेको पश्चात्ताप उत्पन्न होके अपन पुण्य जोडताहै, जो क्रोधको त्यागता है, दूसरेका अपमान करता नहीं, मित्रद्रोह करता नहीं, नीचसेवा, अभिमान, दुष्ट स्वभाव, यह जो छोडता है दूसरेके हृदयको प्राणको अथवा हाडको, किसीभी प्रकारसे संताप होय वैसा कठिन वचन बोलता नहीं, और दूसरेने अग्निसमान संताप करनेवाले वचनरूपी बाणसे ताडना किया, तोभी दिलमें विचार करता है कि, यह मेरेको ऐसा न बोलता तो मैं क्षमा किसको करता. क्षमा किये बगैर पुण्य नहीं जुडता है, ऐसा समझके जो निंदकका उपकार मानता है, ऐसे पुरुषको ज्ञानका सार समझनेवाला जानना. जैसी संगति होती है, तैसाही गुण आता है; साधुकी संगत करनेसे साधु होताहै मूर्ख

की संगतिसे मूर्ख होता है; चोरकी संगतिसे चोर होता है. जैसा धोया हुवा सफेद वस्त्र जैसे रंगमें डालोगे वैसाही रंग लेके उठैगा, आप कोईको छलता नहीं. दूसरेके हाथसे आप छलाताभी नहीं, अपनेको उपद्रव हुवा तौभी आप दूसरेको फँसानेकी इच्छा करता नहीं ऐसे पुरुषके संगतिकी देवभी इच्छा करते हैं.

चुप बैठना जिससे सत्य बोलना अच्छा, सत्यबोलकेभी फिर प्रियबोले तो वो उससेभी अधिक है, प्रिय बोलकेभी धर्मयुक्त बोले तो सबसे श्रेष्ठ है, जैसे पुरुषके पास बैठके जैसेकी संगति करता है, और जैसी स्थिति पकडता है, वैसाही वो पुरुष होजाता है, जो पुरुष जो जो दुःखदायक बातोंको छुटानेकी इच्छाकरता है, वो वो उससे छूटती हैं, जो सब प्रपंचको छोडता है, तो उसको तृणमात्रभी दुःख होता नहीं; जो जो साधेगा सोही साध सकैगा, पुरुषसे असाध्य कुछभी

नहीं है, इसप्रकार आत्रेयऋषि, साध्यदेवके संग बोलकर, तपोवनमें जाते हुये.

यह कहकर विदुर बोला कि, हे धृतराष्ट्र! श्रवणकर जो पुरुष अनीतिसे किसीको जीतता नहीं, अथवा दूसरेके हाथसे जिताता नहीं, किसीके संग वैर करता नहीं निंदा और स्तुति समान गिनता है, हर्ष शोक करता नहीं; प्राणीमात्र सुखसे रहैं ऐसी इच्छा रखता है, सत्यभाषण करता है, कोमल जिसका स्वभाव है, जिसकी इंद्रियें स्वाधीन हैं ऐसे पुरुषको उत्तम पुरुष कहते हैं.

मीठा बोलके झूठा भरोसा देता नहीं, देऊंगा ऐसे मुखमेंसे निकाला तो जरूर देता है. दूसरेका छिद्र शोधन रक्खै सो मध्यम पुरुष गिना जाता है.

उपकार किया तिसका अपकार करता है सो दुराचारी होता है, जिसकी किसीके संगभी इष्टता मित्रता नहीं, दूसरेने अच्छी बात कही तो सुनता नहीं, मित्रको ठगता है, ऐसेको अधमपुरुष समझना चाहिये.

अपना अच्छा होना इच्छता हो तो उत्तमकी संगति करना. प्रसंग देखके मध्यमकी भी करना, परंतु नीचकी तो कदाचित्भी नहीं करना.

जो लोगोंको ठग करके, सदा धन संग्रह करके; अपनेको बडा सयाना पराक्रमी ऐसा समझता है; और उसका लौकिकमें बडापन नहीं है, वो बडे कुलका है परंतु कुलकी योग्यता पाता नहीं.

धृतराष्ट्र पूछता है हे विदुर! मैं बडे कुलका माहात्म्य बहुत सुनता हूं, इसमें जन्म होना ऐसी इच्छा देवभी करते हैं, तो दूसरोंके करनेमें क्या संदेह है, सो कृपा करके बडे कुलका लक्षण कहो.

तब विदुर बोलता है तप १ इंद्रियोंका जय २ वेद-शास्त्राऽध्ययन ३ यज्ञ ४ पुण्यकर्म ५ विवाहादिक उत्साह ६ निरंतर अन्नदान ७ यह सात गुण जहां उत्तम प्रकारसे रहते हैं, तिनका बडा कुल कहना चाहिये, जहां दुराचरण नहीं, जहां माता पिता दुःख पाते नहीं, नित्य

संतुष्ट रहते हैं, जहां धर्माचरण करनेका उत्साह बहुत, अपने कुलकी सत्कीर्त्ति होनी ऐसी सबकी इच्छा, असत्य जहां रहता नहीं यह बडे कुलके लक्षण हैं.

जहां यज्ञादिक कर्म होते नहीं विकल्प लेके वेदकी निंदा होती है, ब्राह्मणकी मर्यादाका ताडन जहां होता है, रखनेको दिया जिस वस्तुको नामंजूर होजाता है, यह सदाचरणहीन असत् कुल जानना.

सत्कीर्त्तिसे अथवा विद्यासे, अथवा रूपवान् पुरुषसे अथवा बहुत द्रव्य है जिससे, उत्तम कुल होता नहीं, जिस कुलमें उत्तम आचरण है और धन थोडाही है तोभी उत्तम कुल कहा जाता है और बहुत कीर्त्ति मिलती है इसकारण यत्न करके सदाचरण करते रहना.

द्रव्य आता है और जाता है द्रव्यहीन हुवा जिसको हीन नहीं समझना, आचरणसे हीन है सो हीन है. सदाचरणहीन जो कुल विद्यावान्‌है अथवा

गोधन अश्वादिक अथवा खेतीवाला है, परंतु बडा होवेगा नहीं.

हे राजा ! अपने कुलमें वैर करनेवाला नहीं होवो; अपने कुलमें राजा तथा प्रधान अथवा कोई दूसरी सत्ता बलसे किसीका द्रव्य हरण करनेवाला नहीं होवो. मित्रद्रोह करनेवाला, कृतघ्नी, असत्य बोलनेवाला, देव, पितर, अतिथि इनको खवाये पहिले खानेवाला, यह नहीं होवो, क्योंकि यह कुलघातकी होते हैं, जो ब्राह्मणका घात करता है, जो ब्राह्मणसे द्वेष करता है, जो बडोंका संरक्षण करता नहीं, वो हमारे कुलमें नहीं होवो.

कोई अपने घर आया, तो उसको बैठनेको जगह १ आसन २ पानी देना ३ मधुर वचन बोलना ४ यह चार साधुके घर नित्य रहते हैं, यह सत्कार घर आयेका कियेसे तिस पुण्यकर्म करनेवाले भक्तिमान् पुरुषका मान्य बढता है, छोटा रथ होता है तौभी भार बहुत सहता है, ऐसा भार दूसरा वाहन

लेता नहीं है; इस प्रकारसे बडे कुलके जो पुरुष हैं सो लोगोंका भार अपन सहन करते हैं, क्योंकि लोगोंका दुःख अपन लेके उनको सुखी करते हैं यह कर्म और मनुष्योंसे होते नहीं.

जो पुरुष मित्रको क्रोध आवैगा इसकरके डरता है अथवा मित्रके संग बोलनेसे शंका रखता है, जहां मित्रता है वहां ऐसा नहीं समझना. क्योंकि मित्रके साथ पिता जैसा विश्वास रखके बोलै, उसका नाम मित्र है. दूसरे लोग पहिचानवाले हैं मित्र नहीं हैं. जो स्नेहसे अपने संग बात करता है, सर्वदा अपना हित चाहता है सो मित्र; वोही अपना बंधु ऐसा समझना, पराया सो पराया ऐसा नहीं गिनना, जो चंचल बुद्धिका पुरुष सो अपने बडोंका मान रखता नहीं, उसके साथ स्नेह बहुत दिन रहनेका नहीं, जो चित्तका चंचल, मनका कपटी, इंद्रियोंके स्वाधीन ऐसे मनुष्यको दैवयोग करके सर्वही अर्थ प्राप्त होगये परंतु वो उसको स्पर्श करता

नहीं, क्योंकि सुखदायक होता नहीं. जैसे बिना पानीके तालावको पक्षी स्पर्श करते नहीं, उसके नजदीक मात्र रहते हैं, कार्य्य बगैर अकस्मात् प्रसन्न होना और अकस्मातही क्रोध करना, यह हलके मनुष्योंका स्वभाव है, जो मित्रने पहिले अपने ऊपर उपकार किया है, संकटमें काम आया है, तो ऐसे मित्रके समयपै जो उपयोग नहीं आया, तो मरे पीछे वो कदाचित् गीधके हाथ पडा तो वोभी कृतघ्नी समझके उसके मांसको स्पर्श नहीं करता, इसवास्ते अपने पास द्रव्य नहीं होवे तौभी अपनी सामर्थ्यानुसार मित्रके कहे बगैरभी उपयोगमें आना चाहिये, जैसे हाथ बगैर कहे अपने शरीरकी रक्षा करता है, पलकें नेत्रोंकी रक्षा करती हैं, ऐसा जिस मित्रका स्वभाव होय, तिसीको मित्र कहना.

अपनेको संताप कभी नहीं होने देना, क्योंकि संतापसे रूप, बल, ज्ञान, इनका नाश होता है और रोगकी प्राप्ति होती है और अपने शत्रुको बडा आनंद

होताहै, इसवास्ते संताप कभी नहीं करना. मनुष्य वारंवार होता है, मरता है, छोटा होता है, बढता है, मांगता है, मँगवावता है, शोक करता है, कराता है, सुख, दुःख, जन्म, मरण, लाभ, हानि यह एक न एक मनुष्य मात्रके पीछे लगेई रहते हैं; परंतु धैर्यवान् मनुष्य हर्ष या शोक करते नहीं, इतना सुनिकै धृतराष्ट्र कहता है. हे विदुर! व्रत, उपवास करके कृश शरीर हुवा है तौभी तेजस्वी पुण्यात्मा, ऐसा जो धर्मराज तिसको मैंने कपट करके छला, तौभी अब युद्धकारिकै मेरे पुत्रोंका घात करैगा, तूने बहुत उपदेश किया परंतु अबतक मेरा उद्वेग पाया हुवा चित्त शांत होता नहीं, सो जिसकरके मेरा चित्त समाधान होय सो कह यह सुनके विदुर कहता है:—

अध्ययन करके प्राप्ति हुई सो विद्या, इन्द्रियनिग्रह, लोभका त्याग इन बगैर तेरे मनकी शांति होने वाली नहीं. मन शांत करनेसे दुःख दूर होता है; तपस्या

"योगसों अप्राप्त वस्तुका लाभ, क्षेमसों प्राप्तहुई वस्तुका रक्षण" सो योग, क्षेम उसको होतानहीं. ज्यादा तो क्या परंतु उसको जो अच्छीबात है सो बुरी मालूम होती है, और जिसबातमें अपना बुरा होनेवाला है सो अच्छी दीखती है.

गायमें दूध, ब्राह्मणमें तप, स्त्रीमें चपल बुद्धि जैसे रहती है वैसेही ज्ञानी पुरुषके पास निर्भयपना नित्य रहताहै, सो हे राजा! जो तेरे कुलके तंतु और जिनको तूने बहुत वर्ष पालेहैं सो पांडव, तेरे पुत्रोंसे वनवास इत्यादिक बहुत दुःख भोगते हैं लौकिकमें उपमा देनेवाले ऐसे देते हैं कि, यह पांडवों जैसे साधु हैं तेरे पुत्र हैं सो पांडवों जैसे नहीं, जलते हुये लकडोंको जुदा किया तो धुवाँ होके त्रास होता है, इकट्ठा जलाया तो जलके संतप्त होता है, इसवास्ते तू पांड॰ प्रीति करके ज्ञानी पुरुष जैसा निर्भय हो.

ब्राह्मण १ स्त्री २ ज्ञानी ३ गाय ४ इनके ऊपर

जो पराक्रम करता है, सो पक्का हुवा फल झाड परसे जैसे गिरता है, वैसा उसके पाप भरनेसे नाशपाता है जिस वृक्षकी जड जमीनमें सुदृढ है और वृक्षभी बडा मजबूत है, परंतु अकेला है तो उसको वायु गिरादेता है. और जो वृक्षोंके समूहमें एकके आश्रयसे एक है तो वह वायुकाभी उपद्रव सहन कर सक्ता है इसवास्ते अकेला पुरुष बडा बलवान् तथा बुद्धिमान् है तोभी अकेला हुवा तो शत्रुसे नाश पाता है, एकका एक आश्रय लेनेसे जाति बढती है, जैसे जलमें कमल.

ब्राह्मण, गाय, ज्ञानी, बालक, स्त्री, तथा जिसका अन्न खाया सो, अथवा जो शरणागत आया सो इतनेको मारना योग्य नहीं.

हे राजा ! सधनपना, और निरोगीपना ये दोनों इस लोकमें सुखके कारण हैं, जो रोगी है सो मरे हुये की गिनतीमें आया, उसके धन है तो क्या उपयोगमें आया, परंतु तेरेको तो ये दोनों अनुकूल हैं तोभी

रोगी जैसा दीखता है, यह क्रोधरूपी रोग तेरेको पांडवोंसे प्राप्त हुवा है दूसरा कुछ निमित्त दीखता नहीं जो बहुत कडुवा है, बहुत कठोर है, बहुत तीक्ष्ण है,ऐसेको साधु गिल जाता है, दूसरेसे गिला जाता नहीं. सो तेरे मस्तकमें भ्रम घुस रहा है, जो क्रोधको तू गिल जायगा तो सुखी होवैगा, इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं. रोगसे पीडित पुरुषको पुत्र, पौत्र, विषय, भोग, धन इनसे सुख होता नहीं. रोगी होवे सो नित्य दुःखी रहता है, बडे हैं सो कपट विद्याका आश्रय करते नहीं. जो अपना किया कर्म सहन करता है, उसपै पराक्रम करना योग्य नहीं, और ऐसेपै क्रूर होके जो लक्ष्मी संपादन करता है उसके पास लक्ष्मी स्थिर रहैगी नहीं, जो धर्मसे मिलाई हुईहै सो बहुतकाल रहती है.

हे धृतराष्ट्र ! मैं तेरेको अच्छी बात कहता हूं, तेरेपुत्र पांडवोंकी रक्षा करैं और पांडव तेरे पुत्रोंकी रक्षा करैं उनके शत्रु मित्र, सोही इनके और इनके सो उनके,

और इनका कार्य सो उनका, उनका सो इनका, यह भाव परस्परका मनमें रखके सुखी रह.

हे राजा ! तू आज कौरवोंमें मुख्य है, तेरे स्वाधीन सब हैं, तू पाण्डवोंका हाथ पकडके अपनी कीर्तिका रक्षण कर. कौरवों, पांडवोंको एकत्र कर. तुम्हारेमें फूट करनेकी इच्छाकरता है उसको शत्रु जैसा समझके उसका पांवतोड, पांडव सत्य धर्मसे चलते हैं इसवास्ते जय पावेंगे, यह निश्चय जानके तू दुर्योधनको युद्ध करनेका भरोसा मतदे, इसमें मेरेको तेरा कल्याण दीखता है.

इति चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अध्याय पाँचवाँ ५.

विदुर कहता है हे धृतराष्ट्र ! पहिले स्वायंभुव मनुने मूर्खोंके सतरा लक्षण कहे हैं सो कहता हूँ. श्रवण कर; यह सत्रह जने आकाशको मुक्की मारके तोडनेकी इच्छा करते हैं, अथवा आकाशमें इंद्रका धनुष

तोडके देखनेवाले हैं अथवा सूर्य चंद्रकी किरणोंको मूठीमें पकडनेवाले हैं ऐसे ऐसे जो नहीं होनेका काम करनेवाले अत्यंत मूर्खोंमेंके मूर्ख समझना चाहिये. कुशिष्यको उपदेश करिकै गुरुपनाकी इच्छा करता है सो १ शत्रुकी सेवा करके कल्याण चाहता है सो २ कुभार्याकी चौकसी रखके उसके पाससे अच्छा चाहता है सो ३ नहीं माँगनेका माँगता है सो ४ थोडा लाभ होनेसे रिसाता है सो ५ थोडा करके बहुत प्रतिष्ठा कहता है सो ६ अनुचित कर्म करके कुलीनपना चाहता है सो ७ विश्वास करनेके लायक नहीं तिसका विश्वास करता है सो ८ आप निर्बल होके बलवान्के संग नित्य वैर रखता है सो ९ नहीं इच्छा करनेकी वस्तुकी इच्छा करता है सो १० लडकीके संग वरको हास्य विनोद करता देखके श्वशुरको क्रोध आता है सो ११ अपने पुत्रकी स्त्री तिसके पिताकी जीविका खाके अपना गुजारा चलाता है फिर उनहीसे मान्य मर्या-

दा चाहता है सो १२ परस्त्री रत होके निर्भयपना चाहता है सो १३ अपनी स्त्रीको अमर्यादाके वचन बोलके फिर उससे पतिपनेका मान्य चाहता है सो १४ अपनेसे कुछ बात होगई जिसकी दूसरेको खबर है तौभी उलट पलट करके उसको भ्रांतिमें डालने चाहता है सो १५ तीर्थमें जिसको देनेको कहा और वो याचक घरपै माँगनेको आया तो उसको नहीं देता और तीर्थनमें हमने बहुत दान दिया है ऐसा कहता है सो १६ दुष्टको साधुपनेका उपदेश करता है सो १७ ये सत्रह मूर्खोंमेंके बड़े मूर्ख हैं.

जो जैसा अपनेको चाहता है तैसाही अपनभी उसको चाहना. भलेके साथ भला होना; कपटीके साथ कपटी होना.

हे धृतराष्ट्र ! मैं तेरेको पहिलेभी कहचुकाहूँ फिरभी कहता हूँ, केवल अभिमान रखनेसे धन, संपत्ति प्राणादिक, सर्वस्व जाता है; अब धृतराष्ट्र पूँछता है हे विदुर !

वेदशास्त्रमें प्राणीकी सौ वर्षकी आयुष्य कही है, सो अब सौ वर्षके पहिलेही पूर्ण आयुष्य भोगे विनाही क्यों मरते हैं ? ऐसा सुनके विदुर कारण कहता है.

बडोंको तुच्छ करके बोलना १ सबसे ज्यादा अपनी बडाई बढाना २ देने योग्य है सो नहीं देना ३ विनाकारण क्रोध करना ४ दूसरेको उपयोग नहीं होके अपनेही शरीरमात्रको सुख करना ५ मित्रके संग द्वेष करना ६ यह छः अवगुण तीक्ष्ण तलवार होके प्राणीके आयुष्यको तोडते हैं; मृत्यु नहीं तोडता है.

जो विश्वास करके पास रक्खा और वो उनकी स्त्रीके पास जाता है सो १ गुरुकी स्त्रीके पास जाता है सो २ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य यह तीनों वर्णमेंका होके शूद्रकी स्त्रीके पास जाता है सो ३ मद्यपीनेवाला ४ बडेरों पै हुकुम करता है सो ५ दूसरेकी उपजीविका का छेदन करता है सो ६ वेद शास्त्र संपन्न ब्राह्मणसे चाकरका काम लेता है सो ७ शरणागतको मारता है सो ८ यह आठ और ब्रह्म-

हत्या करनेवाला है सो बडोंके तथा अपने आयुष्यका घात करनेवाला होता है, इनके संग स्पर्श हुवा तो प्रायश्चित्त करना.

गुरुका वचन पालनेवाला, न्याय अन्याय जानके वर्त्तनेवाला, दाता, देव ब्राह्मणको देके भोजन करनेवाला, हिंसा नहीं करनेवाला, अनर्थके काम नहीं करनेवाला उपकारका प्रत्युपकार करनेवाला सत्य और कोमल वचन बोलनेवाला ऐसा मनुष्य स्वर्गको जाता है.

हे राजा निरंतर मीठे वचन बोलनेवाले बहुत मिलैंगे परंतु कडुवा बोलके अपना भला होना ऐसी बात कहने वाला और सुननेवाला ऐसे दोनों दुर्लभ हैं. राजाको कडुवा लगै चाहै मीठा, वो उनका कल्याण चाहके नीतिहीका वचन बोलैगा. उनको सहायक समझना और ऐसेही पुरुष पासमें रहनेवाले राजाको सहाय वाला सबल समझना दूसरे पेटार्थी पासमें रहै तो क्या फल है.

कुलमें एकपुरुष खराब है और उसके छोडनेसे कुलकी रक्षा होती है तो उसको छोडदेना. कुलके छोडनेसे गाँवकी रक्षा होती है तो कुल छोडदेना. गाँवछोडनेसे देशकी रक्षा होती है तो गाँव छोडदेना. और अपनी रक्षाके वास्ते सर्व पृथ्वीका राज्य छोडना.

संकट कालमें उपयोग पडैगा इसवास्ते धनका रक्षण करना, स्त्री, पुत्रके रक्षण वास्ते धन खर्च डालना. स्त्री पुत्र धन सब जायके अपना रक्षण होता है, ऐसा वक्त आगया और दूसरा उपाय नहीं तो सब छोडके अपना रक्षण करना, क्योंकि शरीर रहा तो अपने स्वार्थवास्ते फिरभी आवेंगे.

हे धृतराष्ट्र ! जूवा है सो वैर उत्पन्न करनेवालाहै इसवास्ते भलेको मन बहलानेकोभी खेलना नहीं चाहिये. अच्छा नहीं है, ऐसा तुमको खेलते वक्तभी कहाथा परंतु रोगीके नजदीक मृत्यु आती है, तो गुणकारी औषधि नहीं रुचती है; सो आज तू चिंताग्रस्त हुआ है

सदा अपना हितही करता है ऐसे सेवकको जो छोडता नहीं तो आपत्कालमें सेवकभी उसको छोडता नहीं एक वक्त सेवकको दीहुई उपजीविका जो कम करता है अथवा चलाता नहीं, तो उसको ठग समझके वहभी उसका अनाहित करता है. इससे पहिलेसे अपनी आमदनी तथा खर्च देखके उसको एकही वक्त ठहरा देना, अपने अनुकूल और अपना कार्य अगतसे करता है ऐसा सहायक रखना. क्योंकि महा मुश्किलका काम होगा तो भी जिसको सहायक है उसको होना सहजही है; जो सेवक धनीका मनोगत समझके काम करता है आलस नहीं रखता, हित रखता है, सदा अनुकूल प्रमाणिक धनीकी शक्ति जानता है, ऐसे सेवकको प्राणसमान रखना चाहिये.

जो कहा काम सुनता नहीं, उन्मत्तपनेसे मैं नहीं करूंगा ऐसा स्पष्ट बोलता है, तुम्हारेसे हम समझदार हैं, ऐसा धनीको दिखाके, उनकी बोलीमें

दूषण लगाता है; ऐसे सेवकका तुरन्त त्याग करना.

जो निष्कपटी १ धैर्यवान् २ कहा काम जल्दी करै ३ दयावान् ४ मधुर बोलनेवाला ५ अपने धनीको छोडके दूसरेके वश कभी होता नहीं ६ जिह्वा स्वाधीन ७ कोई रोगकी पीडा नहीं ८ इन आठ गुणोंवाला उत्तम सेवक समझना.

जिसको अपना विश्वास नहीं .तिसके घरपै रात को कभी नहीं जाना १ रातको किसीकी जगहमें रहना तो धनीको खबर करे विना रहना नहीं चाहिये २ राजाने जिस स्त्रीकी इच्छा किया उसकी इच्छा कभी नहीं करना ३ बहुत जने मिलके अपने संग गुप्त बात करते हैं और वो बात अपनेको रुची नहीं; तो उनको नहीं रुची ऐसी मालूम नहीं होने देना, कुछ निमित्त लेकै वहाँसे चले आना चाहिये ४.

इतनेके संग द्रव्यका व्यवहार नहीं करना, देनेको न इच्छेगा तो नहीं देगा, इसवास्ते राजाके संग १ अपना

और उसका एकचित्त है, ऐसा लोगोंको दीखेगा; इसवास्ते व्यभिचारिणी स्त्रीके संग २ राजाको अभिमान होवेगा कि, यह मेराहै इसवास्ते राजाके सेवकके संग ३ पीछा लेनेका जोर नहीं किया जाता जिससे ऐसे पुत्र अथवा बंधुके संग ४ जिसका पुत्र छोटा है और वो विधवा स्त्रीहै, तो उसके संग ५ क्योंकि दोनोंहीके ऊपर जोर नहीं किया जाता; कोई दूषण देके जिसके पाससे राजाने कारभार छीन लिया उसके संग ६ क्योंकि उसकी फरयाद राजाके पास गई तो अपनेही ऊपर राजा अन्याय लावेगा.

यह दश गुण प्रातःकाल स्नान करनेवालेके पास रहते हैं बल १ रूप २ सुस्वरता ३ स्पष्ट वर्णोंचार ४ कोमलपना ५ सुगंधता ६ निर्मलता ७ शोभा ८ सुकुमारता ९ तथा यह सर्व गुण हैं जिसवास्ते सुंदर स्त्री प्राप्ति १०.

यह छः गुण भूख रखके भोजन करनेवालेके पास रहते हैं. आरोग्य १ आयुष्य २ बल ३ सुख ४ अच्छी

डकार ५ बहुत खवैया ऐसे कहके लोग निंदते नहीं ६.

अपनी भूखके चार विभाग करना उसमेंसे दो भाग अन्नके, एक भाग जल पीनेका, चौथा भाग वायुका संचार होने वास्ते खाली रखना, इसका नाम मितभोजन है इनमें अन्यथा होनेसे रोगका कारण पैदा होता है.

इन सातोंको मनुष्यको घरमें नहीं रखना चाहिये अकर्मी १ खाऊ २ द्वेषी ३ महापातकी ४ घातकी ५ समयानुसार वर्तना जानता नहीं ६ नाना प्रकारके भेष धरनेवाला ७.

इन नवजनेके पास संकट कालमेंभी याचना नहीं करना, अदाता १ गाली देनेवाला २ मूर्ख ३ जंगली ४ कपटी ५ नीचकी संगति करनेवाला ६ निर्दयी ७ हाड-वैरी ८ कृतघ्नी ९.

ये छः नीच हैं इनसे कदाचित्‌भी मिलाप नहीं करना, क्रूरकर्मी १ व्यग्रचित्त २ सदा झूठा ३ जिसका स्नेहके तर्फ चित्त नहीं ४ चंचलवृत्ति ५ अपनेको सयाना समझता है सो ६.

दूसरेकी सहायता बगैर द्रव्य प्राप्ति होती नहीं वैसेही सहायक द्रव्य विना तथा अर्थ विना होता नहीं इन दोनोंको एक न एककी अपेक्षा है एक विना एक सिद्ध होता नहीं.

इस लोकमें जन्म लेके पुरुषको क्या करना चाहिये सो कहता हूँ, स्वस्त्रीसे पुत्र उत्पन्न करना १ उनको विद्याभ्यास कराना २ ऋण नहीं छोडके कुछ आजीविका करके देना ३ कन्या होय तो उसको अच्छे स्थानमें देना ४ पीछे पुत्रके स्वाधीन कारवार करके अपन अरण्यमें तथा एकांत स्थानमें निरंतर परमेश्वरके ध्यानमें लगना ५ तो वो भजन कैसा करना कि, जिसमें प्राणीमात्रका हित होवै, अपनी आत्माको सुख होवै, शरीरको कष्ट पड़ा तोभी चिंता नहीं, केवल परमेश्वर प्रीत्यर्थही करना, अर्थात् मेरेको यह फलप्राप्ति होना ऐसे काम करना नहीं. ऐसे जो कर्म दूसरेका तथा अप-

ना हित करनेवाला सोही परमेश्वरका भजन, यह सब सिद्धिका मूल है ६.

दूसरेको मित्र करलेने विषे बुद्धि १ आप निर्दोष है इसवास्ते शत्रुपै दाँव २ सत्यादिक गुणों करके जिसका तेज ३ बल ४ उद्योग ५ निश्चय ६ यह जिसके पास हैं, उसको पेट भरनेकी चिंता नहीं.

विदुर कहता है, हे राजा ! अपने घरमें कलह करके इतना किया कि, दैवकी कुरूपा, अपने लडके जो पांडव इनके संग वैर, अपनेको चिंता; लौकिकमें अपकीर्ति और शत्रुवोंको हर्ष, भीष्मका कोप, तेरा कोप, द्रोणका कोप तथा धर्मराजका कोप, यह चार बडोंका वडा कोप बढा, तो सर्व लोकोंका विध्वंस कर सकै, अब ऐसा नहीं होवे सो तू कर. हे राजा ! तेरे सौ पुत्र और कर्ण; पाँच पाण्डव यह एक चित्तसे संपूर्ण, समुद्र समेत पृथ्वीका पालन करैं; तेरे पुत्र वन है जिसमें पाण्डव हैं सो सिंह हैं इसवास्ते तू वन सहित

सिंहोंका छेदन मत कर, पाण्डव सिंह बगैर तेरे पुत्र वनका नाश होय सो नहीं होवै. क्योंकि सिंह बिना वन नहीं, वन बगैर सिंह नहीं. जिस वनमें सिंहोंकी वस्ती है उस वनकी रक्षा है, वनसे सिंहोंकी रक्षा है.

दुष्टबुद्धिका पुरुष दूसरेके सद्गुण जाननेकी इच्छा नहीं रखता; दोषमात्रका शोधन रखता है और सद्गुणोंपै जान बूझके दोष लगाता है, उत्तम पुरुष अर्थ की इच्छा करने वास्ते पहिले स्वधर्म आचरते हैं स्वधर्म छोड़नेसे कुछभी अर्थ प्राप्ति नहीं जैसे स्वर्ग लोक छोडनेसे अमृत नहीं.

जिसका चित्त पापोंसे रहित होके ईश्वरके विषे लगा है उसने सब कुछ जाना. जिसने धर्म अर्थ काम मोक्ष सेवनेका था सो सेया वह इसका फल इस लोकमें और परलोकमें पाया, क्रोध, हर्ष इनका वेग जो सहताहै सो इससे विकार पातानहीं, कालसे जो घबराता नहीं सो लक्ष्मीका कृपापात्र होताहै.

पुरुषको पाँच प्रकारका बल है सो कहतेहैं बाहु-बल १ सलाह देनेवालेका बल २ द्रव्यबल ३ सगेका बल ४ बुद्धिकाबल ५ इन सबमें बुद्धिबल श्रेष्ठहै.

बडा, अपकार करसक्ता है ऐसे पुरुषके साथ वैर करके आप उससे दूर रहतेहैं तौभी ऐसा विश्वास कभी नहीं रखना कि, उपद्रव नहीं होगा.

राजा १ स्त्री २ सर्प ३ अध्ययन ४ अपना धनी ५ शत्रु ६ विषयभोग ७ आयुष्य ८ ये मेरेहैं ऐसा भरोसा सयाने पुरुषको कभी नहीं रखना चाहिये.

जिसकी बुद्धिमें विकार हुआ उसकी परीक्षा कर-नेको वैद्य है परंतु औषधी नहीं. यहां यंत्र मंत्र होमादि इनकाभी उपाय नहीं.

सिद्ध १ सर्प २ अग्नि ३ अपनी जात ४ इनकी अवज्ञा करना नहीं; क्योंकि ये बहुत तेजस्वी होते हैं. महातेजरूपी अग्नि काष्ठमें गुप्त है जबतक कोई नहीं जानते; परंतु वोही काष्ठ सिलगके प्रगट हुये पीछे

जिस काष्ठमेंथी उस सहित सब वनको जलाती है. ऐसे ही अपने कुलमें पाण्डव अग्नि समान तेजस्वी हैं, क्षमावंत हैं, जिससे अपना सामर्थ्य दिखाते नहीं. काष्ठमें अग्नि जैसे रहे है.

हे राजा ! तू अपने पुत्रों सहित लतारूप है और पाण्डव सोही एक बड़ा वृक्ष है; सो लता बडे वृक्षका आश्रयलिये बिन बढती नहीं. तेरे पुत्र दुर्योधनादिक सो वन हैं और वनमें पाण्डव हैं सो सिंह हैं, ऐसा जानके भ्रममें मत पड़ सिंह वनहीन नाश पाता है; वन सिंह हीन नाश पाता है, इसवास्ते परस्परका क्षय नहीं होय, यह मेरेको अच्छा दीखता है.

इति पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अध्याय छठवाँ ६.

हे राजा ! कोई महिमान अपने घर आया तो उसके बैठनेको आसन देना, पाँव धोने योग्य है तो

अपन स्वतः उसके पाँव धोना; नहीं तो पानी लाके देना, कुछ उपहार (भेट) देना, पीछे उनसे वर्तमान पूछना, उसने अपनेको पूछा तो अपनभी कहना, पीछे उसको सत्कारसे भोजन कराना, अपने घर आया तिसका जो सत्कार करता नहीं, लोभ करके तथा कृपणपना करके घर आयेको कुछ देता नहीं तो उसका जीवन व्यर्थ है.

शास्त्र नहीं पढके स्वकल्पनाकी औषध देनेवाला वैद्य, शस्त्र बनानेवाला, छिनाल, चोर, क्रूर, मद्य पीनेवाला, गर्भ डलवानेवाला, वेद बेचनेवाला, यह उदक देनेकेभी योग्य नहीं हैं, परंतु अपने मकानपर भोजनके वक्त आगये तो जामातुके समान सत्कार करके उनको भोजन देना.

बुद्धिमानका बुरा करके मैं उससे दूरहूं ऐसा समझना नहीं. क्योंकि बुद्धिमानके हाथ लंबे होते हैं.

विश्वास करनेके योग्य नहीं जिसका विश्वास

कदाचित्भी करना नहीं, विश्वास करनेके योग्य है तोभी बहुत विश्वास करना नहीं, क्योंकि जिसके ऊपर विश्वास रक्खा है सो कदाचित् अपना वैरी होगया, तो उसको अपने मर्म कर्मकी सब खबर है; इसवास्ते अपना समूल नाश करैगा.

स्त्री घरकी लक्ष्मीहै; उसके ऊपर क्षमा रखना, उसका रक्षण करना, अन्न वस्त्रादिक यथायोग्य देना, मधुर बोलना, परंतु उसके स्वाधीन मात्र होना नहीं.

पिताको घरकी तथा स्त्रियोंकी चौकसाई देना, माताको रसोई तथा घरका बंदोबस्त देना, अपने बरोबरके भाई बंधुको पशुवोंकी चौकसाई देना, खेती अथवा दुकान आप खुद सम्हालना, और पुत्रके हाथसे ब्राह्मणोंकी सेवा करवाना.

जिस राजाकी गुह्यबात नजदीक रहनेवाला अथवा दूर रहनेवाला कोईभी जानता नहीं और वह सेवककी दृष्टिसे सर्वत्र देखते हैं, वो राजा बहुतकाल पर्यंत ऐश्वर्य भोगताहै.

मंत्र करनेकेवास्ते एकांत पर्वतपर तथा जंगलमें तथा घरकी छतपर जहां कोईभी सुन नहीं सके उस जगह जाना.

जो मित्र नहीं सो अपना गुह्य जाननेके योग्य नहीं जो मित्र है परंतु सयाना नहीं अथवा सयाना भी है पर जिह्वा स्वाधीन नहीं तो ऐसेको गुह्य कहना नहीं.

परीक्षा किये बगैर प्रधान करना नहीं जो प्रधान अर्थ संपादन करना जानता है, गुह्यगुप्त रखना जानता है, सोही प्रधानकी पदवीके लायक होताहै.

जिस राजाकी सलाह या काम सिद्ध हुये पहिले कचहरीके बैठनेवालेभी जानते नहीं, वो राजा सबमें श्रेष्ठ है, द्रव्यादिके लोभसे जो पापकर्म करताहै वो सिद्धियोंको न पाके किसी समयमें जीवनसेभी भ्रष्ट होताहै.

पुण्यकर्म अपने हाथसे हुवा सो सुखदेता है और पुण्यकर्म नहींहुवा तो पश्चात्ताप होताहै जो ब्राह्मण वेदाध्ययन किया नहीं तो जैसे वो श्राद्धमें बैठाने

लायक नहीं. वैसेही शत्रुके संग वर्ताव करने वास्ते.

यह षट् गुण जिसमें नहीं सो मसलहतके लायक नहीं, प्रथम गुण मैत्री १ बिगाड २ चढजाना ३ ठहर जाना ४ फूट करना ५ दूसरेका आश्रय पकडना ६.

अपनी पहिले मुवाफिकही स्थिति है, अथवा वृद्धि है, अथवा क्षय है, यह जिस राजाको मालूम है सो मैत्री आदि षट् गुण जानता है.

जिसका शील अच्छा तिसके स्वाधीन राज्य रहता है जिसके क्रोधसे शत्रु डरते हैं, जिसके हर्षसे लोगोंको लाभ होता है और जिसके भंडारकी चौकसाई वारंवार होती है उसीको चौतर्फसे द्रव्य मिलता है.

राजा है इसवास्ते आज्ञा मान्य करके सर्व अपनेको सेवते हैं, छत्र अपने मस्तकपर है इतनेसेही संतुष्ट रहना, संपत्ति सेवकों सहित भोगना, अपन अकेलाही सब नहीं भोगना.

ब्राह्मणोंका स्वरूप ब्राह्मणही जानते हैं. ऐसेही

राजाका स्वरूप राजा जानता है स्त्रीका स्वरूप भ्रतार जानता है प्रधानका स्वरूप राजा जानता है.

वध करने लायक अपराधी और अपने हाथसे पकडागया सो शत्रु इनको अपना वश चलै जहांतक मारना. जो नीचत्व धारके अपनी सेवा करनीभी मंजूर किया, तौभी उसको छोडना नहीं. क्योंकि, छोडनेसे वो जल्दीही अपकार करता है.

देव १ राजा २ ब्राह्मण ३ वृद्ध ४ बालक ५ रोगी ६ इन्होंके विषे क्रोध आया तो समेट देना चाहिये, इस झगडेसे अच्छा होनेवाला नहीं, इस झगडेमें मूर्ख होवे सो पडता है बुद्धिवान् पडता नहीं. इसकरके लोक उसको अच्छा कहते हैं, और अनर्थ उसको बाधता नहीं.

इसलोकमें अथवा परलोकमें जैसा अपना कर्महोवै. वैसीही संपत्ति तथा दरिद्र प्राप्त होताहै. बुद्धिमानोंकोही द्रव्य मिलताहै, और मंदबुद्धिको मिलता नहीं, इसका कुछ नियम नहीं है.

विद्या, अच्छास्वभाव, वय, द्रव्य, उत्तमकुल इस करके बडेहैं सो अपमान करते नहीं मूर्ख करते हैं.

नीचकर्मी, मूर्ख, दोषदृष्टी, अधर्मी, दुष्टवचनी, क्रोधी, ऐसे पुरुषोंको अनर्थ जल्दीही प्राप्त होता है.

कंटाला आने विनादेना, वचनपालना, यथायोग्य भाषण, यह गुण जिसके पास रहतेहैं तिसके शत्रुभी वश होताहै.

जो दूसरेको ठगतानहीं, और आप परम सावधान रहता है, उपकार जानता है, बुद्धिवान्, शुद्धस्वभाव ऐसा पुरुष जो निर्द्धनभी होवेगा तौभी उसको इष्टमित्र सेवक मुफ्तमें मिलते हैं.

अकेलाही संपत्ति भोगता है, दुष्टहै, उपकार जानता नहीं, निर्लज्ज ऐसा राजा छोड़ना.

धैर्य १ क्रोध जीतना २ इंद्रियें जीतना ३ निर्मलता ४ करुणा ५ मधुरबोलना ६ मित्रसे बिगाड नहीं करना ७ यह सात गुण सर्वलोकमें ऐश्वर्यकी प्रसिद्धी करनेवाले हैं.

अपने पास सदैव रहनेवाला, निर्दोषी ऐसे पुरुषको जो छलता है उसको जैसे सर्प घरमें रहनेसे निद्रा नहीं आती, वैसे रात्रिको निद्रा नहीं आती है.

जो द्रव्य स्त्रियोंके हाथगया सो निःसंदेह जायगा, उन्मत्तोंके हाथ तथा मूर्खोंके हाथ गया सोभी ऐसा ही जानना.

जहां स्त्रियोंका प्रबल है, कपटीके संग प्रसंगहै, बालक बुद्धिका राजा है, ऐसी जगहमें जो लोग रहते हैं सो, जैसे पत्थरकी नांवमें बैठके नदीमें जानेवाले डूबतेहैं, ऐसेही डूबतेहैं.

जिसके हाथसे अपना कार्य होताहै, तो उसके गुण दोष ऊपर ध्यान नहीं देनेवाले सयाने होते हैं, क्योंकि ऐसे ध्यान देनेसे कार्यका नाश होता है.

जिसकी प्रशंसा कपटी, भाट, अथवा छिनाल स्त्रियें करती हैं, सो पुरुष बहुत दिन बचता नहीं.

हे राजा ! जिसका तेज अपरमित; जिसका धनुष

बडा, जिसके बाण अति तीक्ष्ण, ऐसे पांडवोंको छोडके तू दुर्योधनके ऊपर ऐश्वर्यका भार रखता है, परंतु जैसे राजा बलि ऐश्वर्यके मदमें अंधा होके त्रिलोकीके राज्यसे भ्रष्ट हुवा; वैसेही ऐश्वर्यसे यह भ्रष्ट हुये थके तू तुर्तही देखैगा.

इति षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अध्याय सातवाँ ७.

धृतराष्ट्र कहता है कि, हे विदुर ! मनुष्य कुछभी करनेको समर्थ नहीं है. ईश्वर सत्ताके आधीनहै जैसी काष्ठकी पुतली डोरी हिलानेवालेके स्वाधीन होती है इसवास्ते तुझको जो बोलना होवे सो बोल मैं सुनता हूं.

विदुर कहता है हे राजा ! नहीं बोलनेके समयमें तो बृहस्पतिभी बोलता थका अज्ञानत्व पाके उसका अपमान होता है फिर हमारी तो क्या गिनती है, परंतु तू बुलवाता है इसवास्ते बोलताहूं श्रवण कर.

जिसके पाससे द्रव्य मिलता है वो प्रिय लगता है, अथवा मृदु बोलता है सो प्रिय लगता है, बुद्धि देनेवाला प्रिय लगता है, आश्रय देनेवाला प्रिय लगता है; वोही इनके नहीं होनेसे अप्रिय लगता है. इसवास्ते इनको प्रिय कहना नहीं. कारण प्रिय है सो तो प्रियही है कदाचित्भी अप्रिय होता नहीं.

जहां अपना दिल नहीं लगा उस जगह सद्गुण हैं तौभी दुर्गुण जैसेही दीखते हैं, और जिसकी अपने ऊपर प्रीति है तो उसके दुर्गुणभी सद्गुण जैसेही दीखते हैं, जब दुर्योधन जन्माथा उसीकाल मैंने तेरेको कहाथा कि, इस एक पुत्रके त्याग करनेसे तेरे सौ पुत्रका कल्याण होगा नहीं तो नाश होगा सो मने सुना नहीं.

जिस बातसे हानि थोडी और लाभ बहुत होताहै तो उसको हानि नहीं कहना. हानि ऐसी होती है कि, जिसमें लाभ थोडा और नाश बहुत.

कितनेक द्रव्यसे परिपूर्ण होते हैं, कितनेक गुणसे परिपूर्ण होते हैं, परंतु द्रव्यसे नहीं परिपूर्ण होय और गुणसे नहीं होय तिसका त्याग करना, सर्वगुणोंकरके संपन्न और नम्रता युक्तहै सो मनुष्य प्राणीमात्रको नाश करनेकी इच्छा कभी नहीं करताहै.

दूसरेपर जाल डालनेकी तिसकी वासना, दूसरेका दुःख देखके जिसको अच्छालगताहै, आपसमें विरोध करानेवालाहै उसको निरंतर यही उद्योग करना अच्छा लगताहै तो ऐसेके दर्शनसेभी सुख नहीं होताहै। जिसके संग रहनेसे बडाभय, जिसके पाससे द्रव्य लिया तो बडा दोष और देनेसे बडी चिंता उत्पन्न होती है. जो आपसमें फूटकराता है, सो लोभी, निर्लज्ज, शठ पातकी और भी बडे बडे दोष आचरण करनेवाला है, तो ऐसे पुरुषके साथ मैत्री कभी नहीं करना. क्योंकि ऐसे के साथसे मैत्री टूटती है. जब अपनी करी प्रीति किंवा उपकार तथा इष्टत्व मुफ्तमें जाती है; और उलटा

अपनी निंदा करनेको प्रवर्त होता है और अपना नाश करनेका उद्योग करता है; इसवास्ते मैत्री उत्तम-पुरुषके साथ करना; तौ उसने अपना बिगाड होगया तौभी अपना अपकार नहीं करैगा.

थोडाही अपराध होनेसे क्षमा करता नहीं ऐसे क्रूर, नीच, पुरुषसे बुद्धिमान् पुरुषोंको बहुत दूर रहना चाहिये.

अपने भाई बंधुओंमेंसे कोई दरिद्री, दीन, रोगी होता है उसके ऊपर जो कृपा करता है उसकी सम्पत्ति, संतति बढतीहै, और उसको बहुत सुख प्राप्त होता है.

जो अपने कल्याण तथा वृद्धिकी इच्छाकरताहै. उसको अपना गोत्र बढाना चाहिये, सो हे राजा! कुलकी वृद्धि कर मारै मत.

हे राजा! पांडव परमशूर हैं उनके ऊपर कृपाकर उदर पूर्णवास्ते कुछ गाँवदे, ऐसे करनेसे लोग तेरेको भला कहैंगे.

हे पिता ! अपने भाई बंधुके साथ विरोध करना नहीं जो अपना भला चाहता है, और उसको सुख भोगना है, तो भाई बंधु सहित भोगना; भोजन अथवा सलाह अथवा प्रीति यह परस्पर उनहीके साथ करना, विरोध कदापि नहीं करना, उसके संग अच्छा हुवा तो वो तारते हैं, नहीं तो वो डुबाते हैं, इसवास्ते पांडवोंके साथ भलाई रख, तो शत्रुवोंसे अजीत होगा.

अपन श्रीमंत है इसवास्ते अपने पास कोई कुटुंब-मेंसे आया तो, अपन समर्थ होके, उसका दुःख दूर नहीं किया तो, बडा पातक लगता है. पांडव तेरे पुत्रोंको मारें अथवा तेरे पुत्र पांडवोंको मारें, तौभी दोनोंही तर्फसे पश्चाताप तेरेही को होवेगा; कारण दोनोंहीतेरे गोत्रज हैं, सो विचार कर, आगू अकेले चारपाई पै बैठके संताप करना यह सबसे बुरा अन्याय है. जो पश्चात्ताप करके अब आगूसे सावधान होगा तो आज-तक तुम्हारेसे हुये अन्याय सर्व धो जायँगे.

जो अपन किसीका अपराध किया, और वो संतुष्ट होके क्षमा किया, तो वो अपराध छूट जाता है सुज्ञानी उपदेश करी हुई बातोंका, जिस २ प्रसंगपर अनुभव लेता है; उसके पांव बांके नहीं पडते.

इसकर्ममें पाप होवेगा ऐसा समझके आरंभ नहीं करता है सो बढता है, जो पीछे किये हुवे पाप कर्मका विचार नहीं करता, और फिरभी कियेही जाता है; वो दुष्टबुद्धि घोर नरकमें पडता है.

गुह्यबात इन छः जगहसे फूटती है. मद्यपान १ निद्रा २ आसपास कोई सुनैगा जिसकी चौकसाई नहीं रखनेसे ३ मुखछाया ४ दुष्टके ऊपर विश्वाससे ५ अनाडी सेवक ६

इन ऊपरकी छः जगहसे जो सावधानरहता है सो, और धर्मार्थ काममें चित्त रखता है सो, युद्धमें सावधान रहता है सो, शत्रुपर चढ जाता है सो, शास्त्र जानताहै सो और अपने बडोंकी सेवा करताहै तिसका हित होताहै.

समुद्रमें पडा सो गया १ जो कहा नहीं करता उसके कानमें पडा सो गया २ जड बुद्धिको शास्त्र सुनाया सो फोकटमें गया ३ अग्निहोत्र विना हवन किया सो फोकटमें गया ४.

बुद्धिवान् होवे वह पहिले इतनी परीक्षा करके पीछे मित्राई करना, कुल १ शील २ अपने अनुभवमें कैसा आता है, लोग इसको क्या कहते हैं, उसकी आकृति प्रत्यक्ष देखना, उसका सयानापना देखना, पीछे उसके साथ मित्राई करना.

नम्रता अपकीर्तिका नाश करती है, पराक्रम अन्यथाका नाश करता है, क्षमा क्रोधका नाश करती है, धर्माचरण दुर्गुणका नाश करता है.

कुलकी परीक्षा करना तो इतना देखना, उपजीविकाका साधन, ठाँवठिकाना, घरबार, आचरण, वस्त्रपात्र.

बलात्कारसेभी एकाध दुष्ट मनोरथ उत्पन्न हुवा तो उसका तिरस्कार करना, यह संन्यासीकोभी कठिन है,

सो गृहस्थकी तो क्या गिनती. परंतु, ऐसे होके जो मन खैंचता है सो धन्य है.

बडे बडेकी संगत करता है सो विद्वान्, धार्मिक, हास्यमुख, बहुत इष्टमित्र होनेवाला, मधुर जिसका वचन, हृदय जिसका निर्मल, ऐसे इष्ट ऊपर अत्यंत प्रीति रखना.

उत्तम कुलका होय अथवा नीच कुलका होय परंतु बडोंकी मर्यादा उल्लंघन करता नहीं, स्वधर्म ऊपर वासना जिसकी, जो नम्र सुबुद्धिमान् ऐसा मनुष्य १०० कुलीनसेभी श्रेष्ठ है.

जो दोनोंका आचरण समान, प्रकृति समान, ज्ञान समान, ऐसे दोनोंकी परस्पर मैत्री बहुत दिन चलती है.

दुर्बुद्धि, अनाडी ऐसेको मित्राईसे त्यागकरना, क्योंकि, उसकी मित्राईसे नाश होता है. भ्रष्ट, मूर्ख, क्रोधी, अविचारी, अधर्मी इनके साथ मित्राई करनी नहीं. करा-हुवा उपकार जानता है, धार्मिक, सत्यवादी, मनका

हलका नहीं, जिसका स्नेह दृढ, जिसकी इंद्रियां स्वाधीन, ऐसे मित्रको कदाचित्‌भी छोडना नहीं.

इंद्रियोंके हाथमेंसे विषय छुडाना यह परम कठिन है, एकवक्त छुडाये भये विषयपर फिर इंद्रियोंकी प्रीति करवाना ऐसा लज्जावाला काम दूसरा नहीं.

सर्व प्राणीमात्रसे नम्रता रखनी १ दूसरेपै दोषनहीं रखना २ क्षमा ३ धैर्य ४ मित्रत्वका अपमान नहीं करना ५ यह आयुष्यकी वृद्धि करनेवाले हैं.

कुमार्गमें कितना एक द्रव्य गया यह देखके जो सावधानहोताहै; और आगे अच्छा व्यवहार धंधा करके द्रव्य बढानेकी इच्छाकरता है, तिसको समझदार जानना.

आगे होवैगा ऐसा दुःखका आजहीसे उपाय बांधता है, अभी दुःख होरहाहै उसको भोगे सिवाय सरतानहीं, यह समझके जो चलताहै और पीछे भोगा उस दुःखके अनुभवको भूला नहीं, ऐसा जो मनुष्य तिसका सर्व कार्य सिद्ध होगा.

काया, वाचा, मनसा इनके जो जो कर्म्मों ऊपर निरंतर अभ्यास रखता है तिस पुरुषको सो सो साध्यहैं इसवास्ते सर्वदा पुण्यकर्मकी भावना होने देना.

मंगल पदार्थका स्पर्श करना १ सहायकोंकी अनुकूलता २ शास्त्रका ज्ञान ३ उद्योग ४ सबके साथसीधापना ५ साधुसमागम ६ यह छःबडापन देनेवाले हैं.

निरंतर उद्योगी जो है तिसको धनलाभ और कल्याण होता है और सुख पाता है. क्षमा जैसा हितकरनेवाला और लक्ष्मीदेनेवाला है ऐसा दूसरा पदार्थ नहीं है.

अपनी वृद्धि चाहता है उससे क्षमा रखना, जिसमें स्वधर्म और स्वार्थकी हानि होवे नहीं ऐसा सुख चाहिये जितना अवश्य भोगना, नेमकेही ऊपर बहुत अभ्यास नहीं रखना, अर्थात् खानेका पदार्थ, या स्वस्त्री आदि ऐसे भोग शास्त्रकी आज्ञानुसार हैं तिसमें दोष नहीं इसवास्ते अपनी दृढ वासना होनेपर आग्रह पकडके जीवको दुःख देनांनहीं. क्योंकि, जीवमें वासना

रही तो जीव दुःख पाता है, इसमें फल नहीं. उस दुःखसे, पीडायमान् हुआ थका, उन्मत्त, नास्तिक, आलसी इंद्रियोंका दमन करना जिसको आता नहीं, उत्साह रहित है, उसके पास लक्ष्मी स्थिर नहीं रहती.

सबके साथ सीधा, सबका संकोची, ऐसेको अशक्त समझके कोई दुष्ट होता है सो उसके ऊपर उपद्रव करता है.

अत्यंत गुणवान्, उत्कृष्ट, दाता, अतिशूर, अतिप्रमाणिक, अति सयाना, इनके पास लक्ष्मी स्थिर नहीं रहती है, क्योंकि गुणसे लक्ष्मीको बडी नहीं समझके द्रव्य खर्च करदेते हैं; परंतु लक्ष्मी अंधी है इसवास्ते अत्यंत गुणवान्केही पास रहना कि,अत्यंतनिर्गुणीके पास रहना सो इसका कुछ नियम नहीं, कहींभी रहती है.

वेद पढनेका फल यह है कि, घरमें अग्निहोत्र होना चाहिये, शास्त्र पढनेका फल यह है कि, सद्गुणमें लगना चाहिये, स्त्रीका फल यह है कि, संभोग और पुत्र

प्राप्ति, द्रव्यका फल यह है कि, त्याग और भोगना.

अधर्मसे मिलाये हुए द्रव्यसे परलोकके साधनके लिये जो यज्ञ दानादिक करता है तिसको मरे पीछे यज्ञ दानका फल परलोकमें मिलता नहीं, क्योंकि अधर्म का द्रव्य है इसकारणसे.

बिकट रस्तेमें, तथा वनमें, पर्वतमें, विपत्तिमें, कोईने घबरा दिया अथवा मारनेको शस्त्र निकाला तो सत्य शीलवालेको भय उत्पन्न नहीं होता.

अपना भारीपना रखना, इन्द्रियांदमन, चौकसाई, उन्मत्त नहीं होना, धैर्य, स्मरण, बात विचारके आरंभ करना, यह बड़ापनके कारणहोते हैं.

तपस्वीका बल तप, ब्राह्मणका बल वेदविद्या, असाधुका बल हिंसा और गुणवान्‌का बल क्षमा.

यह आठके सेवन करनेसे व्रतभंग नहीं होता है. उदक १ मूल २ फल ३ दूध ४ होमद्रव्य ५ बडे ब्राह्मणोंकी आज्ञा ६ गुरुका वचन ७ औषध ८.

अपना जीव वैसाही दूसरेका, अपनेको बुरा सो दूसरेकोभी बुरा ऐसे समझके जो चलता है, सो सब धर्मका सारांश जानता है; ऐसा समझना.

शांतिसे क्रोधको जीतना, साधुपनेसे असाधुको जीतना, दानसे कृपणको जीतना, सत्यसे असत्यको जीतना.

इन नवजनेका विश्वास कभी नहीं करना स्त्री १ व्यभिचारी पुरुष २ आलसी ३ भयातुर ४ बहुत क्रोधी ५ अभिमानी ६ चोर ७ कृतघ्नी ८ नास्तिक ९.

सर्वदा नम्र और बूढोंकी सेवा करता है, तिसकी कीर्ति १ आयुष्य २ यश ३ बल ४ यह चार बढते हैं.

हे राजा ! अत्यंत क्लेशसे अथवा अधर्मसे द्रव्य मिलाना, अथवा शत्रुके शरण जाके द्रव्य मिलाना यह तेरेसे नहीं होवो.

निरक्षर पुरुष १ वांझस्त्री २ लडके तो बहुत हैं पर खानेको नहीं मिलता सो ३ राजा विना राज्य है सो ४ ये बातें शोकके करानेवाली हैं.

नित्य मार्ग चलनेसे पुरुष टूटता है, बाँध रखनेसे घोडा टूटता है, पुरुषके वियोगसे स्त्री टूटती है, पानीके झरनेसे पर्वत टूटता है, दुर्वचनसे मन टूटता है, क्योंकि दुर्वचन बोले पीछे पश्चात्ताप होके मन व्यथा पाता है.

अनभ्यास यह वेद तथा शास्त्रका मैल है, व्रत तथा नियम नहीं करना सो ब्राह्मणका मैल है, खारकी जमीन सो पृथ्वीका मैल है, असत्य बोलना सो मनुष्यका मैल है, पतिव्रताका मैल नाच तथा तमाशा देखना है, परदेशमें रहना सो स्त्रीको मैल है, सोनेका चांदी यह मैल है, चांदीका कथील यह मैल है, कथीलका शीशा यह मैल ह, शीशेका मट्टी यह मैल है.

निद्राकी तृप्ति निद्रासे नहीं करना चाहिये, स्त्रीसंभोगसे स्त्रीविषयकी तृप्ति नहीं करना चाहिये, सर्पण डालके अग्निकी तृप्ति नहीं करना चाहिये, मद्य पीके मद्य पीनेकी तृप्ति नहीं करना चाहिये, क्योंकि यह ज्यों

ज्यों बढाते हैं तैसे तैसे ज्यादा बढते जाते हैं सो बढाना नहीं चाहिये.

जिसने लेने देनेसे मित्रको जीता, युद्ध करके शत्रुको जीता, अन्न वस्त्रकी अच्छी तरह तजवीज करके स्त्रीको जीता, ऐसे पुरुषका जीना सफल है.

जिसके पास हजारों रुपये हैं, वोभी भूखे नहीं मरताहै, जिसके पास सैकडों रुपये हैं, वोभी पेट भरता है, जिसके पास कुछभी नहीं है, उसकाभी काम ईश्वर चलाता है, इसवास्ते हे धृतराष्ट्र ! तू बहुत इच्छा छोड जो परमेश्वर देवे उसीमें संतुष्टरह. क्योंकि, सृष्टिपै जितना धन, धान्य, पशु आदि करके है सो सब एकको मिल-गया तौभी उसको पूरा होता नहीं; यह जिसके निश्चय होता है सो दुःख पाता नहीं. हे राजा ! तेरेको वारंवार कहताहूँ पांडव, कौरव तेरेको समान हैं, इसवास्ते दोनोंके ऊपर सम कृपा रखके राज्य पांडवोंको दे, जिसमें तेरा कल्याण होगा ॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अध्याय आठवाँ।

विदुर कहता है, हे धृतराष्ट्र ! साधु जिसका सत्कार करता है, जो अभिमान रहित अपनी शक्ति देखके कोईभी काम आरंभ करता है वह जल्दीसे साधु होता है और साधुपनेसे बहुत सुख पाता है.

बडा लाभभी होता है परंतु अधर्म युक्त है तो उनकी तरफ जो देखता नहीं सो पुरुष सदा सुखी रहता है जैसे सर्प कांचलीको त्यागके सुखी रहता है.

खोटा संपादन करके जय मिलाना, राजाके पास चुगली करके उपद्रव करना, गुरु तथा वृद्ध इन्होंके साथ कपट करना यह ब्रह्महत्या समान होता है.

दूसरेको खराब नजरसे देखना सो और अपनी मृत्युको जल्दी बुलाना सो यह दोनों जुदा नहीं हैं.

अति विवाद करना, अति द्रव्यका नाश करना यह दोनों एकही हैं.

गुरुसेवा नहीं करना, थौडे दिनोंमें बहुत विद्या पढनेकी इच्छा करना और थोडी विद्या है और बहुत

आती है ऐसी हामी भरना; यह तीनों विद्याके शत्रुहैं.

विद्याकी इच्छा करनेवालेको यह सात अवगुण-छोडना; आलस्य १ गर्व २ चंचलवृत्ति ३ बातें ४ मस्ती ५ मान ६ लोभपना ७ सुखकी इच्छा करनेवालेको विद्या कहाँ ? विद्याकी इच्छा करनेवालेको सुख कहाँ ? इस वास्ते सुखीको विद्या छोडनी विद्यावान्को सुख छोडना, सुख और विद्या दोनों एकत्र नहीं.

लकडियोंसे अग्नि तृप्ति होता नहीं, नदियोंसे समुद्र तृप्त होता नहीं, सब प्राणीमात्रसे मृत्यु तृप्त होती नहीं, पुरुषोंसे छिनाल स्त्री तृप्त होती नहीं.

आशा धैर्यका नाश करती है, काल पदार्थ मात्रका नाश करता है, क्रोध लक्ष्मीका नाश करता है, कृपण-ता कीर्तिका नाश करती है, अपालना पशुवोंका नाश करता है.

हे पिता ! सब पुण्यकर्मोंमें श्रेष्ठ, सो मैं तुमसे कहता हूँ सो मनमें दृढ रक्खो, कामवास्ते अथवा लोभवास्ते

अथवा जीववास्ते धर्म छोडना नहीं. अधर्मसे कभी जय नहीं होता है धर्म सोही नित्यहै; सुख दुःख यह आता है और जाता है, जीव नित्यहै, जीवका कारण अविद्या यह मात्र अनित्य है इसवास्ते छोड़ और जिसका कभीभी नाश नहीं ऐसा जो नित्य वस्तु परमेश्वर तिसमें निष्ठा रखके संतोष पा. सर्व लाभमें संतोष बडा लाभ है; क्योंकि, बडे बडे बलवान् पराक्रमी ऐसे राजा धन धान्य करिकै परिपूर्ण ऐसा सकल पृथ्वीका पालन करके सकल विषय भोग छोडके संतोष न पाते, सर्व छोडके कालके स्वाधीन होगये, यह मृत्युलोककी वस्ती ऐसी है कि, बहुत क्लेश भोगके पालन किया ऐसा अपना प्रीतिका पुत्र, सो मरता है; तब दीन होके रोता है, फ़िर निरुपाय होके उसको उठाके जल्दी घरसे बाहर काढके काष्ठका चिता रचके जलाते हैं, और राख होजाती है, तब सगे सोई तथा भाई बंधु इत्यादिक निराश होके पीछे आते हैं, मरे हुयेका शरीर अग्नि-

अथवा कीडे अथवा पक्षी खाते हैं; द्रव्य दूसरे भोगते हैं, पुण्य अथवा पाप मात्र यह दो उसके संग चलते हैं, इसवास्ते पुण्यकी पूँजी जोडके संगलेना यह अच्छी बात है, इस मृत्युलोकके ऊपर जैसे स्वर्ग है, वैसे ही नीचे नरकहै, इसवास्ते हे राजा ! मेरी इच्छा यह है कि, नरकका स्पर्श मत कर.

यह मेरा उपदेश सुनेगा तो इस लोकमें यश पावेगा, और यहाँ तथा परलोकमें तेरेको भय नहीं होवेगा. जीव है सो एक नदी है, जिस ठिकाने तीर्थ सो धर्म है, सत्य सो जल है, धैर्य सो तट है, दया सो लहरें हैं, ऐसी नदीमें स्नान किया सो पवित्र हुआ जो सदा निर्लोभी सोही पुण्यवान् समझना.

हे राजा ! काम क्रोधादिक सोही एक सरोवर और श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण, यह पंचेंद्रियरूपी जल है, ऐसा जो यह संसाररूपी सरोवर, तिसमें धैर्यरूपी नौका बनाके, जन्म मृत्युसे तिरजावे.

बुद्धिमें बडा, धर्ममें बडा, विद्यामें बडा, अवस्थामें बडा ऐसा जो अपना भाई बंधु, तिसको संतुष्ट रखके अच्छा या बुरा करना सो पूछके करता है, सो कभी नहीं ठगाताहै.

धैर्य दृढ करके स्त्री, विषय तथा जिह्वा, इनसे अपनेको रखना; नेत्रोंसे सावधान रहके हाथ पगोंको रखना मन सावधान करके कर्ण नेत्रोंको रखना, नेम ऊपर लाके मन और वाक्यको रखना.

जो यथाकालमें स्नान संध्या करता है, वेद शास्त्र अध्ययन करता है, दोषित अन्न खाता नहीं, सत्य बोलता है, सत्कर्म करता है, ऐसा जो ब्राह्मण सो ब्रह्म लोकको जाता है.

जो वेद अध्ययन, अग्निहोत्र, यज्ञ, योगादिक कर्म प्रजापालन, गो ब्राह्मणकी पालना, युद्धमें शूर ऐसा जो क्षत्रिय सो स्वर्गमें जाता है.

अध्ययन करके ब्राह्मण, क्षत्रिय, आश्रित, इन्होंको

द्रव्यका विभाग देता है, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है, ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, इन्होंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है, यह चारों वर्णका धर्म है. हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य बिना पांडवोंके हाथमें दिये क्षत्रियधर्म होनेका नहीं, इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमें जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वह पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है, ऐसा सुख सो पावैगा.

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति, विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है. सो श्रीमहाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४० अध्याय पर्य्यंत, श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप रीतिसे वर्णन

किया, सो आश्रय लेके बनाई है, जो यह नीति हमेशः बाँचके अथवा सुनिकै,एक एक बातका अनुभव लेवैगा, तिसका सर्व दोष जायगा, अनर्थसे टलैगा, दुःख जाकर सुख होवैगा, संकट प्राप्त नहीं होगा, काम, क्रोध, लोभकी पीडा नहीं होवेगी, लौकिकमें मान बढैगा, लक्ष्मी प्राप्त होवैगी, सदाकाल चित्तकी वृत्ति स्थिर रहैगी, मृत्युसे भय नहीं लगैगा, और पीछे त्रिलोकीके स्वामी जो परमकृपालु सो सब मनोरथ पूर्ण करके अंतकालमें निजधाममें ले जावैंगे.

इति अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

वैशंपायन ऋषि जन्मेजय राजाको कहता है, कोई एक समयमें धर्म, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव यह पाँचों पांडव द्वैतवनमें रहते थे, वहाँ एक ब्राह्मण आके उन्होंको बोला कि, हे महाराज ! मेरी अग्निहोत्रकी अरणी अर्थात् (अग्नि सिलगानेकी लकडियां) वृक्षके ऊपर रक्खीथीं, सो वहाँसे एक हारिण लेके भग गया, सो उसका शोध करके अरणी मेरेको लायदो, नहीं तो अ-ग्निहोत्रका भंग होता है. ऐसे ब्राह्मणका वचन कानोंमें पडतेही, पाँचों पांडवोंने धनुष बाण लेके सर्व वन ढूँढा परंतु हारिणका पता लगा नहीं, और क्षुधा तृषासे बहुत पीडायमान होके एक वटके वृक्षके नीचे बैठे, तब धर्मराज बोला, नकुल ! तृषासे प्राण व्याकुल होता है सो कहींसेभी, पानी लाव ऐसे सुनतेही नकुलने एक बडे वृक्षपै चढके देखा तो एक तालाब दूरसे दृष्टिमें आया, पीछे वो शीघ्रही वहाँ जाके पानी भरनेको लगा, तो

वृक्षमेंसे आवाज आई, अरे ! पहिले मेरे प्रश्नका उत्तर दे पीछे पानी पी, उत्तर दिये विन पानी पीवैगा तो मर जायगा, उसका कहना नकुलने नहीं मानके पानी पिया तो पीतेही अचेत होगया, उसके शोध करनेको धर्मराजने भीमको भेजा, ऐसेही अर्जुन, सहदेव, एकका शोध करनेको एकको भेजा, सो चारोंही पानी पीके अचेत मूर्च्छामें पडे, तब धर्मराजने बहुत देरतक राह देखा परंतु बंधु आये नहीं, इससे चिंतातुर होके शोधते शोधते वहभी पानीके पास आया और चारों भाइयोंको अचेत देखके बहुत दुःख करनेको लगा, इतनेहीमें वृक्षके ऊपरसे आवाज आई कि, हे राजा ! इस स्थलका स्वामी मैं यक्ष हौं, तेरे भाइयोंको मैंने माराहै सो अब तुम मेरे प्रश्नोंके उत्तर देवोगे तो दैवयोगसे यहभी जीते हो जावैंगे, और जो तुम मेरी आज्ञा भंगकर पानी पीवोगे तो तुम्हारी भी यही दशा हो जावेगी, यह वचन सुनके धर्मराज बोले कि, हे यक्ष ! तेरे कैसे कैसे प्रश्न हैं

सो बोल ! मैं यथाज्ञानसे उत्तर देऊँगा; सुनके यक्ष प्रश्न करता है, धर्मराज उत्तर देता है.

प्रश्न—ब्राह्मणको बडापन किससे मिलता है ?

उत्तर० वेदशास्त्र जाननेसे.

प्र० सुकीर्ति किससे मिलती है ?

उ० इन्द्रियां स्वाधीन करनेसे.

प्र० इच्छा किया हुआ फल काहेसे मिलता है ?

उ० तपस्यासे.

प्र० सुबुद्धि किससे मिलती है ?

उ० वृद्धोंकी सेवा करनेसे.

प्र० ब्राह्मणका दैवत कौन ? उ०—वेद.

प्र० उनका परंपरागत धर्म कौनसा ? उ०—तपश्चर्या.

प्र० उनका मरन कौनसा ?

उ० देहादिकके विषे दृढ अभिमान.

प्र० उनको पाप कौनसा ?

उ० दूसरेका दोष बोलना.

प्र० क्षत्रियोंका दैवत कौनसा ?　उ०—धनुष बाण.

प्र० उनका परंपरागत धर्म कौनसा ?

उ० यज्ञादिक कर्मकरना.

प्र० उनका मरन कौनसा ?

उ० युद्धमें भय पाना तथा भाग जाना.

प्र० उनका पापकर्म कौनसा ?

उ० शरणागतकी रक्षा नहीं करना.

प्र० जलमें उत्तम जल कौनसा ?　उ०—पर्जन्यका.

प्र० थोडा बोनेसे बहुत क्या होता है ?

उ० धान्य, तथा याचकोंको दिया हुआ.

प्र० फलोंमें उत्तम फल कौनसा ?

उ० सुपुत्र फल.

प्र० जीताही मरे बराबर कौन ?

उ० मूर्ख, तथा जिसका शरीर परोपकारमें कभी नहींपडा सो.

प्र० पृथ्वीसे बडा कौन? उ० माता.

प्र० आकाशसे ऊंचा कौन? उ० पिता.

प्र० तृणसे अधिक अंकुर आके बढता है सो कौन,

उ० चिंता.

प्र० पवनसे ज्यादा चपळ कौन, उ० मन.

प्र० हृदय किसको नहीं, उ० पत्थरको.

प्र० अपने वेगसे बढे सो कौन, उ० नदी.

प्र० कुटुंब वत्सलका मित्र कौन, उ० द्रव्य.

प्र० गृहस्थका मित्र कौन, उ० भार्या.

प्र० रोगीका मित्र कौन, उ० औषध.

प्र० मृत्युका मित्र कौन; उ० दान, धर्म.

प्र० इस लोकमें अमृत कौनसा, उ० दूध.

प्र० ठंढीका औषध कौनसा, उ० अग्नि.

प्र० सर्वका स्थान कौनसा, उ० पृथ्वी.

प्र० धर्मका मुख्य स्थान कौनसा उ० दक्षता.

प्र० यशका मुख्य स्थान कौनसा, उ० दान.

प्र० स्वर्गका मुख्य स्थान कौनसा, उ०- सत्य.

प्र० सुखका मुख्य स्थान कौनसा, उ०- सदाचरण.

प्र० मनुष्यकी आत्मा कौनसी, उ०-पुत्र.

प्र० दैवने किया सो सखा कौनसा, उ० भार्या.

प्र० उपजीवन क्या, उ० पर्जन्य.

प्र० सबका रक्षक कौन, उ० द्रव्यत्याग.

प्र० धनमें उत्तम धन कौनसा, उ० विद्या

प्र० धन्य पुरुष हैं जिनमें उत्तम कौन.

उ० परोपकारी.

प्र० लाभमेंसे उत्तम लाभ कौनसा,

उ० आरोग्यता.

प्र० सुखमेंसे बडा सुख कौनसा, उ० संतोष.

प्र० इस लोकमें उत्कृष्ट धर्म कौनसा.

उ० भूतमात्रपर दया.

प्र० क्या छोडनेसे शोका नहीं पाताहै.

उ० मान,

प्र० मैत्री किसके संग हुई घटती नहीं है.

उ० साधुके संग.

प्र० क्या छोडनेसे प्रिय होता है, उ० मान.

प्र० क्या छोडनेसे शोक नहीं होता है, उ० क्रोध.

प्र० क्या छोडनेसे सम्पत्तिवान् होता है.

उ० इच्छा छोडनेसे.

प्र० याचकोंको किसवास्ते देते हैं.

उ० पुण्य प्राप्ति वास्ते.

प्र० नटनर्तकोंको किसवास्ते देते हैं.

उ० लौकिकके वास्ते.

प्र० सेवकोंको किसवास्ते देना.

उ० उन्होंका संसार चलाने वास्ते.

प्र० राजाको किसवास्ते देना.

उ० अपना भय मिटनेको.

प्र० लोग किसमें लिपटे हुये हैं.

उ० अज्ञानमें.

प्र० प्रकाश किसमें लिपटा हुआ है,

उ० अँधियारेमें.

प्र० मित्र किसवास्ते छोडता है, उ० लोभवास्ते.

प्र० स्वर्गमें किससे नहीं जाता है, उ० कुसंगसे.

प्र० जीताही मरे समान ऐसा मनुष्य सो कौन.

उ० दारिद्री.

प्र० सर्वमें पूज्य कौन, उ० गुरु.

प्र० विष कौनसा. उ० याचना.

प्र० तप कौनसा. उ० स्वधर्माचरण.

प्र० दम कौनसा. उ० मन स्वाधीन रखना.

प्र० क्षमा कौनसी.

उ० हित तथा अहित सहन करना.

प्र० लज्जा कौनसी. उ० नहीं करनेका करना सो.

प्र० ज्ञान कौनसा. उ० सर्व सार जानना.

प्र० शम कौनसा. उ० चित्तमें शांति रखना.

प्र० दया कौनसी. उ० सर्वका सुख इच्छना.

प्र० आर्जव कौनसा.

उ० सर्वके ऊपर समान चित्त रखना.

प्र० पुरुषको अजीत शत्रु कौनसा. उ० क्रोध.

प्र० अतिशय बडी व्याधि कौनसी. उ० लोभ.

प्र० साधु कौनसा.

उ० प्राणीमात्रका हित करता.

प्र० असाधु कौनसा. उ० निर्दयी.

प्र० मोह कौनसा.

उ० जिस कारणसे धर्म नहीं समझा जाता सो.

प्र० मान कौनसा.

उ० अपनहीं बडे हैं ऐसा समझता है सो.

प्र० आलस्य कौनसा.

उ० अपना स्वहित नहीं देखना सो.

प्र० शोक करने योग्य क्या है, उ० अज्ञान.

प्र० स्थिर क्या. उ० धर्मकी स्थिरता.

प्र० धैर्य कौनसा.

उ० इन्द्रियां स्वाधीन करना.

प्र० स्नान कौनसा.

उ० मनका मल धोना सो.

प्र० ज्ञानी कौन. उ० जिसकी समदृष्टि सो.

प्र० पंडित कौन.

उ० स्वधर्म जानके वैसा आचरण करता है सो.

प्र० नास्तिक कौन. उ० मूर्ख.

प्र० मूर्ख कौन. उ० वृथाभिलाषी.

प्र० काम क्या. उ० संसारी वासना.

प्र० मत्सर कौनसा.

उ० दूसरेका अच्छा देखके बुरा लगना.

प्र० अहंकार किसको होता है.

उ० अज्ञानीको.

प्र० दंभ कौनसा. उ० सुकृत प्रगट करना.

प्र० हलकापन कौनसा.

उ० दूसरेका छिद्र काढना.

प्र० अक्षय नरक किस कर्मसे होता है.

उ० याचकने माँगा सो देनेको कहके फिर देता नहीं इस कर्मसे.

प्र० ब्राह्मणके शरीरपै ब्राह्मणपना किससे रहता है.

उ० सदाचरणसे.

प्र० प्रिय वचन बोलनेवालेको किसका लाभ होताहै.

उ० प्रीतिका.

प्र० विचारपूर्वक काम करनेवालेको क्या लाभहोताहै.

उ० जय.

प्र० बहुत मित्र करता है तिसको क्या लाभहोता है.

उ० सुख.

प्र० स्वधर्ममें तत्पर रहता है तिसको क्यां लाभहोताहै.

उ० उत्तम गति.

प्र० सुखी कौन.

उ० ऋण नहीं होय. परदेशमें नहीं रहे, अपने घरमें साग रोटी खाके सोता है.

प्र० आश्चर्य क्या.

उ० प्रतिदिन मनुष्य मरते हैं, सो प्रत्यक्ष देखते हैं तौभी अपन अमर हैं ऐसा लोक समझते हैं सो.

प्र० मार्ग कौनसा.

उ० बडे बडे जिस रस्तेसे गये सो.

प्र० वर्तमान क्या.

उ० काल, र्यको अग्नि कल्पके उसपर रात्रि दिन काष्ठ रचके, मास, ऋतु इस कडछीसे प्राणीमात्रको, महामोह रूप कढाईमें डालके सिजाता है, सो वर्तमान.

इति यक्षप्रश्न संपूर्णम् ।

दोहा ।

परमगुह्य पावन सुभग, अमल अनूप अलभ्य ।
राज्यनीति शिक्षासरल, पढहिं गुणहिं नरसभ्य ॥
श्रावण वदि मावस बुधे, भयो समापत ग्रंथ ।
कृष्णलाल रुचिसों पढो, सदाचरणको पंथ ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष–मुंबई.